Actual size Page 1 frunt_master.qxd 2/26/2020 1:23 PM Page 1

राष्ट्रीय साप्ताहिक
हुब्बुल वतने जुज़ऊम मिनल ईमान...
जन वकालत
वतन से मोहब्बत ईमान का हिस्सा है...
सम्पादक - राजेश झाला ए. रज़ाक
वर्ष - 08, अंक - 18 गुरुवार, दिनांक- 27 फरवरी से 04 मार्च 2020 कीमत 5 रु. पृष्ठ 8 www.janvakalatnews.com email:-janvakalat.rtm@gmail.com

जिला चिकित्सालय की कहानी जनवकालत की जुबानी...

एक दिन डॉ. ललित जायसवाल जैसे आरोपियों को कानून अपराधी घोषित करेगा...

राजेश झाला ए. रज़ाक
सम्पादक

पिछले माह 9 जनवरी 2020 से रतलाम जिला अस्पताल में हो रही गंभीर धांधलियों को **राष्ट्रीय साप्ताहिक जनवकालत** समाचार पत्र ने सिलसिलेवार प्रकाशित कर मध्य प्रदेश की कमलनाथ सरकार के गुड गवर्नेंस के सम्मुख रखा। समाचार पत्र की डॉ. ललित जायसवाल से या अन्य वरिष्ठ डॉक्टरों से या अन्य जिला अस्पताल एवं जिला प्रशासन के जिम्मेदारों से किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत द्वेषता नहीं है, अपितु भारत के समाचार पत्रों का कर्तव्य है, कि असंवैधानिक कार्य, गलत गति विधियों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से भ्रष्ट तत्वों का भंडाफोड़ कर भारतीय समाज में संविधान सम्मत, रचनात्मकता, नैतिकता एवं राष्ट्रीयता की भावनाओं के साथ देशवासियों का चहुमुखी विकास हो। रतलाम जिला सहित मध्य प्रदेश और पूरे देश में चिकित्सकों एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों की कमी है। देश की लापरवाह सरकार देशवासियों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही है, वहीं डॉक्टरों की एक बड़ी जमात आमजन के साथ अमानवीय व्यवहार से बाज नहीं आ रही है। देश का रोगी बीमार एवं उसके परिजन भ्रष्ट डॉक्टरों की चंगुल में फंसे हैं, क्योंकि डॉक्टरों को पता है, कि मरीज को अंतोगत्वा उन्हीं के पास आना है। मरीज चाहे प्राइवेट अस्पताल में जाए, या सरकारी अस्पताल में जाए कुछ भ्रष्ट तत्वों ने रतलाम सहित पूरे देश में मकड़ जाल बिछा रखा। कमीशन बाजी का खेल हर विभाग में चल रहा है, भारत देश में रतलाम जिला अस्पताल के भ्रष्ट डॉक्टर ललित जायसवाल और इनके साथ पर्दे के पीछे से प्रक्षय देने वाले भ्रष्ट तत्वों की कारगुजारी पर पर्दा डालने वाले प्रशासन के जिम्मेदारों ने मध्यप्रदेश में कुशासन को बढ़ावा दिया है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण रतलाम जिला अस्पताल के भ्रष्ट डॉक्टर एवं स्वास्थ्य अधिकारी है। (1) 11 वर्षीय नाबालिग गर्भवती की सोनोग्राफी, (2) मृत गर्भवती किशोरी का पोस्टमार्टम नहीं करना, श्मशान में परिजन द्वारा मृतक के पेट को चीरकर बच्ची निकालना तथा शासकीय नियमों के विरुद्ध कार्य करने में रतलाम जिला अस्पताल को महारत हासिल है। रतलामी जनता यह कयास लगा रही है, कि आखिर इन भ्रष्टों को संरक्षण कौन दे रहा है? कोई असामाजिक तत्वों से तार जोड़ रहा है, तो कोई मंत्रियों के दलालों से सांठगांठ बता रहा हैं जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन ने अपेक्षाकृत कम ही भ्रष्टों पर दृष्टि डाली है। यदि

डॉ. ललित जायसवाल

कांग्रेस सरकार के नुमाइंदे समय रहते रतलामी भ्रष्टो पर विधि सम्मत कार्यवाही करवाने में चुक करेंगे, तो भारतीय समाज के जिम्मेदार विधानसभा में भी प्रश्न उठाएंगे। राष्ट्रीय साप्ताहिक जन वकालत समाचार पत्र ने आमजन के सम्मुख भ्रष्ट तत्वों का नकली मुखौटा उजागर किया है, तथा समाचार पत्र सदैव कानून को साथ में लेकर चलने में विश्वास रखता है, इसलिए रतलाम जिला अस्पताल से संबंधित कई अहम जानकारियां सूचना के अधिकार के तहत चाही गई है जैसे- (1) रतलाम जिले में कुल कितने सोनोग्राफी सेंटर एवं मशीनें उपलब्ध है, तथा यह मशीनें किसके नाम से रजिस्टर्ड है, संपूर्ण विवरण प्रदान करें। (2) सोनोग्राफी सेंटर की मशीनों का लाइसेंस नवीनीकरण कब से कब तक का है। (3) जिला चिकित्सालय में कितनी सोनोग्राफी मशीनें है, तथा कितने सोनोलॉजिस्ट कार्यरत हैं, तथा कितने सोनोलॉजिस्ट के पास पीसीपीएनडीटी का लाइसेंस उपलब्ध है। (4) वर्तमान में पीसीपीएनडीटी की जांच जिला अस्पताल में कौन-कौन से डॉक्टर कर रहे हैं। (5) सोनोग्राफी सेंटर जिला अस्पताल की पिछले 6 माह का पीसीपीएनडीटी का संपूर्ण विवरण प्रदान करें। (6) जिला चिकित्सालय में पदस्थ समस्त सोनोलॉजिस्ट की वर्तमान पदस्थापना, स्थापना आदेश तथा उनके शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र की छाया प्रति, तथा पीसीपीएनडीटी कर रहे डॉक्टरों के लाइसेंस की छाया प्रति प्रदान करें। (7) निगरानी समिति द्वारा रतलाम जिले में पिछले 1 वर्ष में कितनी बार निरीक्षण किया गया, तथा निरीक्षण उपरांत की गई कार्यवाही का संपूर्ण विवरण प्रदान करें। (8) रतलाम जिले में पंजीकृत क्लीनिक, हॉस्पिटल, नर्सिंग होम, लैब की सूची की प्रमाणित छायाप्रति। सूचना के अधिकार के तहत मांगी गई है, किंतु जानकारी संबंधित विभाग ने नहीं दी है। जन वकालत समाचार पत्र समूह जनहित में शीघ्र ही न्यायालय में रतलाम जिला अस्पताल के भ्रष्ट तत्वों के विरुद्ध वाद प्रस्तुत करने पर विधि विशेषज्ञों से विमर्श कर रहा है, ताकि गरीब असहाय रोगियों को न्याय मिल सके, तथा वह दिन दूर नहीं है, जब वर्तमान के आरोपी डॉ. ललित जायसवाल सहित अन्य भ्रष्ट तत्व अपराधी घोषित होंगे।

लूटेरा कय्यूम मंसूरी कब आएगा पुलिस की गिरफ्त में...?

जनवकालत/रतलाम
जाफर अब्बासी

लूटेरा कय्यूम मंसूरी

कृषि उपज मंडी रतलाम में वर्ष 2016 में मंसूरी ट्रेडर्स के प्रोपराइटर कय्यूम अहमद मंसूरी पिता इकबाल अहमद मंसूरी निवासी हॉट रोड कब्रिस्तान के सामने रतलाम एवं उसके अन्य साथियों ने मिलकर मंडी व्यापारियों से करोड़ों रुपयों की धोखाधड़ी की। हुसैन ट्रेडर्स के प्रोपराइटर मोहम्मद मेहफूज खान ने जनवकालत को अपनी आपबीती सुनाते हुए बताया कि कय्यूम मंसूरी ने अन्य व्यापारियों की तरह उनसे भी व्यापारिक लेन-देन बना रखा था, और विश्वास में लेकर उनसे साढ़े पन्द्रह लाख रुपये ले रखे थे, जिसे लेकर वह फरार हो गया। जब उसके घर जाकर पता किया तो उसके घरवाले उसके पिता एवं भाई रिजवान इधर-उधर की बात करके एवं रुपए देने की बात कहकर गुमराह करते रहे। परेशान होकर मोहम्मद मेहफूज खान ने स्टेशन रोड थाने पर आरोपियों की एफ. आई. आर. दर्ज कराई। जिस पर आरोपी मोहसिन पिता अशरफ मंसूरी ने जमानत करा ली, एवं कय्यूम मंसूरी आज तक पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। जिसका स्टेशन रोड थाने में स्थाई वारंट निकला हुआ है। पीड़ित मेहफूज खान ने बताया कि उसने बैंक की सीसी लिमिट के लोन से रुपए निकाल कर दिए थे। जिसका ब्याज भरते भरते वह बर्बाद हो चुका है, और काम धंधा भी पूरी तरह बंद हो गया है, एवं वो अत्यंत दयनीय स्थिति में पहुंच गया है, और लोन के रुपए चुकाने में असमर्थ है, एवं दूसरी तरफ प्रशासन की आंख में धूल झोंक कर कय्यूम मंसूरी, मोहसिन एवं उसके भाई व सहयोगी धोखाधड़ी के रूपयों से अपना कारोबार बढ़ा रहे हैं, और सुखद जीवन का आनंद ले रहे हैं। विडंबना यह है, कि हमारे देश के लचीले कानून एवं न्याय प्रक्रिया में देर के चलते ऐसे कई पीड़ित दयनीय स्थिति में जीवन यापन कर रहे हैं, और कुछ तो परेशान होकर आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं। दूसरी तरफ कय्यूम मंसूरी जैसे चालबाज शासन-प्रशासन में अपनी हर तरह की पकड़ बनाकर कानून के शिकंजे से बचते रहते हैं। आज जरूरत है कि ऐसे लुटेरों पर सख्ती करके पीड़ितों की मदद करने और उन्हें इंसाफ दिलाने की, ताकि वे ऐसे नरकीय जीवन से बाहर आ सके और यह तभी संभव है, कि हमारा शासन प्रशासन इन लुटेरों को किसी तरह की कोई मोहलत ना दें, एवं इनसे सख्ती से निपटने के लिए हर संभव कदम उठाए।

बंद पड़े वोल्टेज पॉवर प्लांट का भी भरना पड़ रहा लाखों रूपए का बिजली बिल

परवेज इकबाल हुसैन
जनवकालत

झाबुआ। जिला चिकित्सालय में एक करोड़ की लागत से लगा फोटो वोल्टेज पॉवर प्लांट डेढ़ साल से बंद है। इसे फिर से शुरू करने के लिए अस्पताल प्रबंधन ने लगातार कोशिश की, लेकिन यह प्लांट बंद ही रहा। प्लाट चालू नहीं होने से हर महीने लाखों रुपए बिजली का बिल चुकाना पड़ रहा है।

अक्षय ऊर्जा लिमिटेड पीथमपुर ने फोटोवॉल्टिक पावर प्लांट शुरू किया गया था। धीरे- धीरे यह प्लांट मेंटेनेंस के अभाव में दम तोड़ता रहा। पिछले डेढ़ साल से पावर प्लांट पूरी तरह बंद है। अस्पताल के बाहर सोलर प्रोजेक्ट की जानकारी देता बोर्ड रिक्त है। संयंत्र की स्थापना संयंत्र की लागत इसकी क्षमता केंद्रीय वित्तीय सहायता राज्य सरकार की प्रोत्साहन राशि एवं हितग्राही अंशदान राशि की जानकारी देते कॉलम बिल्कुल खाली है। इस बोर्ड पर सिर्फ परियोजना का नाम परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी एवं वित्तीय सहयोग देने वाली संस्था का नाम लिखा हुआ है। इस पर लिखे नंबर पर बात करने के दौरान फोन नहीं उठाया जाता। 6 साल पहले अस्पताल प्रबंधन की ओर से 70 लाख रुपए 24 घंटे विद्युत उपलब्ध करने के लिए कनेक्शन के नाम पर एडवांस जमा किए थे। पैसे जमा करने के बाद भी अस्पताल की समस्या जस की तस बनी रही।

अस्पताल में चल रही दर्जनों यूनिट प्रभावित हो रही- विद्युत कटौती एवं वॉल्टेज की समस्या से जूझ रहे जिला चिकित्सालय में विद्युत व्यवस्था अपर्याप्त होने से बहुत से काम बाधित हो रहे हैं। डायलिसिस, मेटरनिटी, ओटी, आईसीयू, एसएनसीयू में 24 घंटे बिजली रहना जरूरी है। इससे निपटने के लिए अब 24 घंटे बिजली कनेक्शन से अलग-अलग यूनिटों को जोडने की कवायद शुरू हो चुकी है। अभी तक अस्पताल के लिए कोई सुरक्षित एवं सीधी विद्युत लाइन नहीं होने के कारण कलेक्ट्रेट से विद्युत लाइन अस्पताल से जोड़ी है। दूरी अधिक होने लाइन में लगातार फॉल्ट होते रहते हैं। इससे अस्पताल में चल रही दर्जनों यूनिट प्रभावित हो रही हैं। विद्युत कटौती के दौरान अस्पताल की कुछ यूनिट को 6 जनरेटर के माध्यम से विद्युत सप्लाई की जा रही है। इसमें से आधे जनरेटर बंद हैं।

होम्योपैथिक चिकित्सा व निवारण

नमस्ते, होम्योपैथिक चिकित्सा व निवारण में इस बार हम बात करेंगे ''नैजा ट्रीपुडिएन्स'' के बारे में-

''नैजा ट्रीपुडिएन्स''

डॉ. तन्मय चौहान
जनवकालत

नैजा ट्रीपुडिएन्स का उपयोग तब किया जाता है जब मन निरंतर काल्पनिक बीमारियों के बारे मे सोचता है, और पछताता है। निराशा के साथ अपने आप को मारना चाहने की बात करता है, तुतलाकर बात प्रकट करता है। वर्षा से डरता है, अकेला रहना जैसे श्राप हो, बाएं कनपटी से दर्द प्रारंभ होकर सिर के पिछले भाग तक फैल जाता है, ऊबकाई और वमन साथ-साथ चलता है, नींद आने पर दम घुटने जैसे दौरे पड़ते है। आंखे एक टूक बनी रहती है और लटक जाती है। कान मे विभिन्न प्रकार की ध्वनि आती है जो मरीज के अलावा किसी को सुनाई नहीं देती। कान मे दर्द के साथ स्राव निकलता है जिसका रंग काल होकर मछली जैसी बदबू आती है। इस प्रकार के रोगी को नैजा ट्रीपुडिएन्स एक डोज देने से आराम आ जाता है। सांस लेने पर घुटन के साथ कंठ मे जकड़न की अनुभूति होती है, शाम के समय दमे जैसे सिकुड़न का अनुभव होता है। ये दमा सर्दी जुकाम के साथ आरंभ होता है। छाती मे खिंचाव और अधीरता लगती है। हृदय के ऊपर कोई बोझा रख दिया हो ऐसा लगता है। ऐन्जाइना के दर्द का भय जो बाए कंधे तथा बाजू तक फैल जाता है, मरीज मृत्यु भय से ग्रसित रहता है। हृदय की गति अनियमित होने पर दवा का सेवन करना लाभप्रद होता है। स्त्रीयों मे बाए डिंबग्रंथि से संबंधित समस्याओं मे यह बहुत उपयोगी दवा है विशेषकर जब समस्याए शल्योपचार के बाद से शुरू हुई हो । मरीज को गहरी नींद मे खर्राटे लेने की आदत हो तो इस दावा के उपयोग से आराम पड़ जाता है।

डॉ. तन्मय चौहान
पता- 111 ग्लोबस टाउनशिप (पुरानी) रतलाम।
मो.-8770234635

बॉडी बिल्डिंग स्पर्धा! भोपाल के समीर खान ने जीता खिताब, उज्जैन के विकास वर्मा बेस्ट पोजर बने

जनवकालत

रतलाम। राज्य स्तरीय संस्था उज्जैन के तत्वावधान में तथा अखिल भारतीय बॉडी बिल्डिंग फेडरेशन के मार्गदर्शन में रतलाम बॉडी बिल्डिंग एसोसिएशन द्वारा विधायक सभागृह बरवड़ में भव्य दुधिया रोशनी में जगमगाते संगीत की धुन पर आयोजित मिस्टर एमपी बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता के अंतिम मुकाबले में भोपाल के शरीर साधक समीर खान ने मिस्टर एमपी का खिताब जीत कर 31 हजार नगद एवं आदमकद चमचमाती हुई ट्राफी पर कब्जा किया। उज्जैन के शरीर साधक विकास वर्मा ने बेस्ट पोजर का खिताब जीतकर 21 हजार नगद एवं ट्राफी पर कब्जा किया। बेस्ट मस्क्यूलर देवास के प्रदीप ठाकुर एवं बेस्ट इम्प्रूव शाजापुर के सुल्तान खान 7 हजार नगद एवं ट्राफी हासिल की। स्पर्धा में पूरे प्रदेश के लगभग 180 खिलड़ियों ने भाग लेकर अपनी मॉस-पेशियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

प्रारंभ में स्पर्धा का शुभारम्भ मुख्य अतिथि म.प्र. महिला कांग्रेस कमेटी की कार्यवाहक अध्यक्ष सर्वश्री यास्मीन शैरानी, विधायक हर्ष विजय गेहलोत, के.के. सिंह कालूखेड़ा, राज्य शरीर सौष्ठव संघ के अध्यक्ष प्रेमसिंह यादव, महासचिव अतीन तिवारी, चंदु शिवानी, मुबारिक खान, अध्यक्ष फय्याज मंसुरी, डॉ. कुलदीप त्रिवेदी, दिनेश शर्मा, निमिष व्यास, प्रवीण सोनी, ओमप्रकाश त्रिवेदी ने किया।

अतिथियों का स्वागत

अतिथियों का स्वागत रितेशनाथ, महेश व्यास, सुनील जैन, विनोद यादव, कमलेश पालीवाल, असलम खान, रिफाकत शैरानी, संजय सिरवी, शैलेन्द्रसिंह रजावत, प्रीतमसिंह आदि ने किया।

इन्होंने किया पुरस्कृत

प्रतियोगिता के विजेताओं को शहर कांग्रेस अध्यक्ष विनोद मिश्रा मामा, जोएब आरिफ, गौरव पहलवान, मयंक जाट, राजीव रावत, बलवीरसिंह सोढ़ी, राजेश भरावा, सीएसपी हेमंत चौहान, क्षेत्रीय पार्षद प्रहलाद पटेल, जिला पंचायत उपाध्यक्ष डीपी धाकड़, महेश शर्मा, शांतिलाल शर्मा, हर्ष दशोत्तर, डॉ. योगेन्द्र चाहर, शैलेन्द्र शर्मा सरवन, अनोखीलाल कटारिया, अमितसिंह, राजकुमार शिन्दे, मोहम्मद जमील खान, अमजद खान आदि ने पुरस्कृत किया।

निर्णायक

निर्णायक की भूमिका शैलेंद्र व्यास, जितेन्द्रसिंह कुशवाह, राजेश भारतीय, समीर व्यास, अनिल चावण्ड, अकबर शेख ने निभाई। प्रतियोगिता स्थल पर सर्वश्री संजय गुणावत, बीके जोशी, स्नेह सचदेव आदि उपस्थित थे।कार्यक्रम का संचालन दिनेश शर्मा तथा स्पर्धा का संचालन शैलेन्द्र व्यास ने किया। आभार डॉ. कुलदीप त्रिवेदी ने माना।

ब्यूरोचीफ सुजान कोचट्टा
जनवकालत

पीएम आवास! पात्र हितग्राहियो को तुरन्त पट्टे वितरण करे या दुसरी किश्त का भुगतान करे

जावरा। पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अनिल दसेडा ने नगर पालिका प्रशासक राहुल नामदेव धोटे को एक पत्र के माध्यम से निवेदन किया कि एक वर्ष पूर्व लगभग 400 आवासहीन नागरीको ने जावरा नगर पालिका को आवासीय पट्टे के लिए आवेदन किया था। नगर पालिका एवं राजस्व अमले ने संयुक्त जाँच कर 273 आवासीय पट्टे की लिस्ट तैयार कर अनुविभागीय अधिकारी महोदय को प्रेषित की अनुविभागीय अधिकारी महोदय द्वारा उक्त पात्र हितग्राहियों की लिस्ट को जिला कलेक्टर महोदय के माध्यम से जिला प्रभारी मंत्री से अक्टुबर माह में अनुमोदित कराकर जावरा अनुविभागीय अधिकारी को प्राप्त हो चुकी हैं। प्रमुख सचिव नगरीय प्रशासन विभाग श्री संजय जी दुबे ने 20 दिसम्बर 2019 तक पात्र हितग्राहीयों को पट्टे वितरण के आदेश सभी जिला कलेक्टर महोदय को दिए थे, लेकिन आज दिनांक तक 273 पात्र हितग्राहियों को पट्टे वितरण नही होने के कारण प्रधानमंत्री आवास योजना का पूरा लाभ नहीं मिल सका है। आज भी कई पात्र हितग्राही नगर पालिका तथा अनुविभागीय अधिकारी कार्यालय के चक्कर काट-काट कर परेशान हो गये है, लेकिन अभी तक उक्त 273 पात्र हितग्राहीयों की परेशानी हल नहीं हुई है। उक्त पात्र हितग्राहीयां में अधिकांश हितग्राहीयां को नगरपालिका ने प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ देते हुए 1 लाख रूपये दे दिये और हितग्राहीयो ने मकान निर्माण भी चालू कर दिया था अब पट्टा वितरण नहीं होने से अगली किश्त नहीं मिल रहीं है जिस कारण अधिकांश हितग्राहीयो को या तो मजबूरन अधूरे मकान में रहना पड़ रहा है या किराये के मकान में रहना पड़ रहा है, जबकि उक्त पात्र हितग्राहीयो की अगली किश्त का पैसा तीन से चार माह पूर्व नगर पालिका को राज्य शासन से प्राप्त हो चुका है। पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अनिल दसेडा ने नगर पालिका प्रशासक राहुल नामदेव धोटे से मांग की है कि या तो 273 पात्र हितग्राहियो को तुरन्त पट्टा वितरण कार्यक्रम सम्पादित करे या पात्र हितग्राहीयो की प्रधानमंत्री आवास योजना की दुसरी किश्त का तुरन्त भगतान करे, ताकि पात्र हितग्राही अपने अधूरे मकानो का काम पूर्ण कर सके।

आपकी सरकार आपके द्वार! अधिकारियों के दल ने ग्रामीणों क्षैत्रों में पहुंच जानी समस्याएं, आवेदनों का मौके पर किया निराकरण

जनवकालत

रतलाम/सरवन। आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत कैंप सैलाना विकासखंड के ग्राम सरवन में संपन्न हुआ। कैंप में 260 आवेदन प्राप्त हुए। 59 आवेदनों का मौके पर निराकरण किया गया, शेष आवेदनों के निराकरण के लिए समय सीमा तय की गई। इस अवसर पर विधायक श्री हर्षविजय गहलोत द्वारा आम जनता से चर्चा कर उनकी समस्याओ का निराकरण किया गया। सीईओ जिला पंचायत श्री संदीप केरकेट्टा, एसडीएम श्रीमती कामिनी ठाकुर, श्री जगदीश पाटीदार, श्री पप्पन खान पठान, श्री कोदर सिंघाड़, श्री राम चौधरी तथा जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर विधायक श्री गहलोत ने उपस्थित आमजन को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ के नेतृत्व में राज्य शासन द्वारा आम जनता के हितों के संवर्धन हेतु कैंप आयोजित किए जा रहे हैं। आमजन को अपने छोटे-मोटे कामों के लिए इधर-उधर चक्कर नहीं लगाना पड़े, इसलिए एक स्थान पर कैंप आयोजित कर समस्याओं का निराकरण किया जा रहा है। श्री गहलोत ने इस अवसर पर क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं के हल हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि अब ग्रीष्मकाल के दौरान आदिवासी ग्रामीण इलाकों में जिन स्थानों पर पेयजल की समस्या उत्पन्न हो सकती है, उनका चिन्हांकन करें। निराकरण की योजना अभी से तैयार कर ले। क्षेत्र में विभिन्न ग्रामों में आंतरिक सड़कों की पूर्ति की जाना है, खासतौर पर स्कूलों से गांव को जोड़ने वाली सड़कों की मरम्मत एवं निर्माण किए जाना है। इसके अलावा जर्जर हो गए स्कूल भवनों की भी मरम्मत करना है। अधिकारी सभी समस्याओं का निराकरण तत्परता के साथ करें। विधायक ने मुख्यमंत्री मदद योजना का जिक्र करते हुए कहा कि इस योजना में आदिवासी परिवारों को जन्म एवं मृत्यु के अवसरों पर निःशुल्क खाद्यान्न राज्य शासन द्वारा उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने शासन की अन्य कल्याणकारी योजनाओं का भी जिक्र किया।

कार्यक्रम में श्री पप्पन खान पठान ने भी संबोधित करते हुए कहा कि आपकी सरकार आपके द्वार कैंप आमजन की समस्याओं के निराकरण में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। आम जनता को अपने कार्यों के लिए अब इधर-उधर नहीं भटकना पड़ता है। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय विधायक श्री हर्षविजय गहलोत भी सक्रियता के साथ आम जनता की समस्याओं का निराकरण करा रहे हैं। कार्यक्रम में विभिन्न शासकीय विभागों की जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभ हितग्राहियों को विधायक श्री गहलोत के हाथों वितरित किए गए। सीईओ जिला पंचायत श्री संदीप केरकेट्टा ने अपने उद्बोधन में केम्प आयोजन की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन श्री आशीष दशोत्तर ने किया।

कैंप में हेल्थ कैंप आयोजित हुआ जिसमें चिकित्सकों द्वारा परीक्षण एवं परामर्श दिया गया, औषधि वितरण भी हुआ। अधिकारियों द्वारा शासन की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। विधायक श्री गहलोत द्वारा उपस्थित आमजनों तथा अधिकारियों, कर्मचारियों को नशे के विरुद्ध शपथ दिलाई।

अधिकारियों का दल अमरगढ़, जानपालिया तथा उंडेर पहुंचा, ग्रामीणों की समस्याएं जानी

आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत जिला स्तरीय अधिकारियों का दल सैलाना विकासखंड के ग्राम अमरगढ़, जानपालिया तथा उंडेर पहुंचा। आदिवासी ग्रामीणों से रूबरू हुआ, उनकी समस्याओं की जानकारी प्राप्त की। कई समस्याओं के निराकरण की राह भी प्रशस्त की। ग्राम अमरगढ़ में ग्रामीणों की मांग पर तालाब के गहरीकरण के लिए सीईओ जिला पंचायत श्री संदीप केरकेट्टा ने जल संसाधन विभाग को निर्देशित किया। शीघ्र ही तालाब का गहरीकरण कार्य आरंभ होगा। इसी प्रकार अमरगढ़ से कोठार होते हुए बांसवाड़ा की ओर मार्ग निर्माण के लिए भी सीईओ जिला पंचायत श्री केरकेट्टा द्वारा ग्रामीणों को आश्वस्त किया गया।

सीईओ श्री केरकेट्टा ने अमरगढ़ के बालक आश्रम का भी निरीक्षण किया। उन्होंने आश्रम की रसोई का निरीक्षण करते हुए खाली पड़ी भूमि पर किचन गार्डन बनाने के निर्देश दिए इसके बाद जानपालिया में आंगनवाड़ी भवन तथा इजीएस शाला का भी निरीक्षण किया। सीईओ श्री केरकेट्टा ने अमरगढ़ में स्कूल पहुंचकर अध्यापन व्यवस्था का भी जायजा लिया। बच्चों तथा शिक्षकों से चर्चा की। निर्माणाधीन हाई स्कूल भवन का निरीक्षण किया। कैंप में अन्य विभागीय अधिकारियों द्वारा भी अपनी स्थानीय स्थापनाओं का निरीक्षण किया गया। इस दौरान आंगनवाड़ी, उचित मूल्य दुकान, पशु औषधालय आदि देखे गए।

प्रायवेट स्कूलों को मान्यता के लिए आवेदन 27 फरवरी तक मंजूर

भोपाल। प्रदेश में संचालित प्रायवेट स्कूलों को शिक्षा का अधिकार कानून के अंतर्गत नवीन मान्यता अथवा मान्यता नवीनीकरण के लिए मोबाईल एप से आवेदन करने की 27 फरवरी तक मंजूर किये जाएंगे। प्रायवेट स्कूलों की नवीन मान्यता एवं मान्यता नवीनीकरण की संशोधित समय सारणी के अनुसार प्रायवेट स्कूल, नवीन मान्यता अथवा जिन स्कूलों की पूर्व मान्यता शीघ्र समाप्त हो रही है, वे मान्यता नवीनीकरण के लिए मोबाईल एप से 27 फरवरी तक आवेदन कर सकते हैं।

सत्यापन 12 मार्च तक

संबंधित विकासखंड स्रोत केन्द्र समन्वयकों द्वारा 12 मार्च तक स्कूलों का भौतिक सत्यापन कर ऑनलाईन निरीक्षण रिपोर्ट जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित की जाएगी।

निराकरण 30 मार्च तक

जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा प्राप्त मान्यता आवेदनों का 30 मार्च तक निराकरण किया जाएगा। अशासकीय विद्यालयों की मान्यता के लिये मोबाईल एप के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करने की व्यवस्था सत्र 2020-21 से प्रारंभ की गई है। एप के माध्यम से आवेदन करने के लिए प्रायवेट स्कूल मोबाईल फोन का उपयोग कर सकते हैं।

अपेक्षा दसेड़ा बनी कम्पनी सेक्रेटरी

जावरा। (जनवकालत)। इंड़ियन इंस्टिट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरी का परिणाम 25 फरवरी को घोषित किया गया जिसमें जावरा की अपेक्षा दसेड़ा प्रोफेशनल प्रोग्राम की परीक्षा पास कर कंपनी सेक्रेटरी बन गई। अपेक्षा जावरा के पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष अनिल दसेड़ा की पुत्री है। अपेक्षा ने यह परीक्षा एक विषय में एक्सएम्श के साथ पास की है। अपेक्षा ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता एवं दादाससुर जी को दिया है।

इस्लाम ईंसानियत का पक्षकार हैं

"अपने रब को भूल कर दुनिया में खोया है इंसान"

कुरान की सूरत अका सुर में अल्लाह ने फरमाया कि (ए लोगो) ज्यादा तलबी ने तुम्हें गाफिल कर दिया। यहां तक कि तुम कब्रिस्तान जा पहुंचे, यानी कि इंसान कभी किसी उपलब्धि पर या किसी जरूरत के पूरा होने पर संतुष्ट नहीं होता। हमेशा पहले से ज्यादा हासिल करने की चाहत एवं कोशिश में लगा रहता है, जो उसे उसके रब ने दिया, उस पर उसका शुक्र नहीं करता, बल्कि अपनी इच्छाओं की सीमाओं को बढ़ाता ही जाता है, और इसीलिए वह माल, दौलत, सुख, समृद्धि हासिल करने में ऐसा मग्न हो जाता है कि वह अपने ईश्वर की याद और उसकी चाह की भी परवाह करना भूल जाता है। वह हराम, हलाल सही, गलत, सच, झूठ आदि सभी तरह के फर्क भूल कर अपनी नफ्स एवं शैतान की इच्छा अनुसार कार्य करने लगता है, और दुनिया का माल इकट्ठा करते करते मर जाता है, और उसका जमा किया हुआ माल उसके किसी काम नहीं आता है। वह खाली हाथ इस दुनिया से अपने गुनाहों के साथ चला जाता है। जिसकी सजा उसे स्वयं भुगतना पड़ेगी, उसके परिवार के लोग उसका साथ नहीं देंगे, जिनके खातिर उसने यह सब किया होगा। आगे अल्लाह कहता है, कि अनकरीब तुम्हें सारी हकीकत का पता चल जाएगा। क्या सही है, क्या गलत और बेशक तुम सब अपनी आंखों से जहन्नुम को देखोगे, सारे इंसान अच्छे बुरे उस जहन्नुम नर्क के कुए पर बने पतले पुल पर से गुजरेंगे। उस रब के सच्चे बंदे उसके पार निकलकर जन्नत में चले जाएंगे और गुनहगार उस जहन्नुम की आग में गिर जाएंगे। जहां उनके कर्मों के अनुसार सजा मिलेगी। इसी बात को अल्लाह ने कहा है, कि हम कयामत में तुमसे अपनी दी हुई सारी नेअमतो का हिसाब लेंगे। उसने जो हमें इतना खूबसूरत, ताकतवर, समझदार इंसान बनाया और हमारी जरूरतों का इस संसार में हर तरह का इंतजाम किया, दूसरे जीव जंतुओं की तुलना में हम इंसानों को हर तरह की सुविधाएं दी और उनके उपयोग के लिए हमें समझती अच्छे बुरे का हमें फर्क समझाया फिर हमने किस तरह उसकी दी हुई नेअमतों का सदुपयोग किया या दुरुपयोग किया, इन सब का वह हिसाब लेगा। इसी प्रकार किसी ने अपनी ताकत का कमजोर पर जुल्म करने में इस्तेमाल किया होगा तो उसे बड़ी भारी सजा मिलेगी। हदीस में यहां तक नबी ने फरमाया कि यदि किसी सिंग वाली बकरी ने किसी बगैर सिंग वाली बकरी को मारा होगा तो उसको भी इंसाफ मिलेगा, फिर यदि कोई किसी पर जुल्म करें किसी का माल नाहक खा जाए, किसी की इज्जत से खेले, किसी को भी किसी भी तरह से सताए और मजलूम को इंसाफ ना मिले तो उस अल्लाह (ईश्वर) का रब होने, मालिक होने का क्या अर्थ रह जाएगा। इस लिए एक दिन इंसाफ तो होना ही है।

वैकल्पिक नहीं आवश्यक चिकित्सा है फिजियोथेरेपी

डॉ. राम पंवार
जनवकालत

अधिकांश लोग फिजियोथेरेपी को 'एक और' वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति से ज्यादा महत्व नहीं देते। कुछ इसके दायरे को मसाज तक सीमित कर देते हैं, तो कुछ इसे खेल के दौरान लगने वाली चोट को ठीक करने के लिए उपयोगी मानते हैं। पर फिजियोथेरेपी की उपयोगिता इससे कहीं ज्यादा है। अगर दवा, इंजेक्शन और ऑपरेशन के बिना दर्द से राहत पाना चाहते हैं तो फिजियोथेरेपी के बारे में सोचना चाहिए। चिकित्सा और सेहत दोनों ही क्षेत्रों के लिए यह तकनीक उपयोगी है। पर जानकारी की कमी व खर्च बचाने की चाह में लोग दर्द निवारक दवाएं लेते रहते हैं। मरीज तभी फिजियोथेरेपिस्ट के पास जाते हैं, जब दर्द असहनीय हो जाता है। फिजियोथेरेपी में न्यूरोलॉजी, हड्डी, हृदय, बच्चों व वृद्धों की समस्याओं के क्षेत्र से जुड़े खास एक्सपर्ट भी होते हैं। आमतौर पर फिजियोथेरेपिस्ट इलाज शुरू करने से पहले बीमारी का पूरा इतिहास देखते हैं। उसी के अनुसार आधुनिक इलेक्ट्रोथेरेपी (जिसमें इलाज के लिए करेंट का इस्तेमाल किया जाता है) और स्ट्रेचिंग व व्यायाम की विधि अपनाई जाती है। मांसपेशियों और जोड में के दर्द से राहत के लिए फिजियोथेरेपिस्ट मसाज का भी सहारा लेते हैं। कई फिजियोथेरेपिस्ट दवाएं व इंजेक्शन भी देते हैं, जिसे डॉक्टर की सलाह के बिना नहीं लेना चाहिए। **सिखाता है सांस लेने की कला-** फिजियोथेरेपी का दायरा सिर्फ मांसपेशियों और हड्डियों तक सीमित नहीं है। इसकी सीमा में वो तंत्रिकाएं भी आती हैं जो हमारे शरीर के विभिन्न अंगों को नियंत्रित करती हैं। उदाहरण के तौर पर अस्थमा या किसी भी तरह के सांस के रोगों को ही लें। कार्डियोवस्कुलर फिजियोथेरेपिस्ट इस तरह के मरीजों को सांस रोकने और छोड़ने वाले व्यायाम या गुब्बारे फुलाने जैसे अभ्यास के जरिये ठीक करता है। वास्तव में इसके जरिये कार्डियोवस्कुलर फिजियोथेरेपिस्ट गर्दन और छाती की मांसपेशियों की स्ट्रेचिंग करवाते हैं, जिससे वो और मजबूत बनते हैं। **अस्थमा-** बदलती जीवनशैली में अस्थमा केवल बुजुर्गों को ही नही बल्कि कम उम्र के लोगों में देखने को मिल रही है। अस्थमा एक जानलेवा बीमारी है, जिससे ज्यादातर लोग ग्रसित होते हैं। इस समस्या से निजात पाने के लिए फिजियोथेरेपी अच्छा विकल्प हो सकता है। एक्सपर्ट के मुताबिक, अस्थमा में मरीज को अलग-अलग ब्रीदिंग एक्सरसाइज कराई जाती है, जिससे फेफड़े मजबूत हो जाएं और अस्थमा से निजात मिल सके।

MY PHYSIO
डॉ. राम पंवार
फिजियोथेरेपिस्ट एण्ड क्लीनिकल फिटनेस एक्सपर्ट
मो.- 9981200302

स्व. गौरव मिगलानी को दी श्रृद्धांजलि

जनवकालत/रतलाम

स्व. गौरव मिगलानी

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय कमलनाथ जी के निजी सहायक श्री आरके मिगलानी के सुपुत्र गौरव में गिलानी का असामयिक निधन होने पर रतलाम जिला एवं शहर कमलनाथ विचार सद्भावना मंच के जिला अध्यक्ष इंदर सोनी, शहर अध्यक्ष मनोज सिंह शक्तावत की उपस्थिति में शोक सभा मंच के जिला प्रवक्ता यतीश शर्मा के निवास स्थान कस्तूरबा नगर रतलाम पर आयोजित की गई। जिसमें कमलनाथ विचार सद्भावना मंच के जिले से समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने उपस्थित होकर स्वर्गीय गौरव महिलानी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर, दो मिनट का मौन धारण किया और ईश्वर से मृत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं मिगलानी परिवार को इस दुख की घड़ी में संबल प्रदान करने की प्रार्थना कर की।

मातृ वंदना योजना के तहत पांच हजार रूपए की राशि मिलेगी...

जनवकालत/रतलाम

मातृ वंदना योजना के तहत अब पहली बार गर्भधारण करने वाली महिलाओं को तीन किश्तों में कुल पांच हजार रूपए की राशि आंगनबाडी केन्द्र के माध्यम से प्रदाय की जाएगी। इसके लिए गर्भवती महिला को शीघ्र ही अपना पंजीयन नजदीक की आंगनबाडी केन्द्र में दर्ज कराना होगा। इसके लिए अपना आधार कार्ड, अपने पति का आधार कार्ड के साथ बैंक एकाउंट प्रस्तुंत करना होगा। टीकाकरण कार्ड प्रस्तुत करने पर एक हजार रूपए की राशि उनके आधार लिंक खाते में प्रदाय की जाएगी। छह माह के पश्चात आवश्यक टीकाकरण कार्य महिला के द्वारा कराए जाने पर उनके बैंक खाते में दो हजार रूपए की राशि जमा की जाएगी। महिला के प्रसव पश्चात बच्चे के टीकाकरण का प्रथम चक्र पूरा होने पर अंतिम किश्त के रूप में दो हजार रूपए की राशि, जन्म प्रमाण पत्र तथा टीकाकरण कार्ड प्रस्तुत करने पर बैंक खाते में जमा की जाएगी। इस प्रकार महिला को कुल पांच हजार रूपए की राशि, महिला एवं बाल विकास विभाग के माध्यम से प्रदाय की जाएगी। सरकारी अस्पताल में प्रसव होने पर नियमानुसार अस्पताल से राशि महिला के बैंक खाते में जमा की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने 808वें उर्स के लिये रवाना की चादर

जनवकालत/रतलाम

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ ने 808 वें उर्स के मुबारक मौके पर अजमेर शरीफ के लिए चादर रवाना की। मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ की तरफ से पूर्व चेयरमेन अजमेर दरगाह कमेटी श्री शेख अलीम इस चादर को लेकर अजमेर शरीफ जाएंगे। अजमेर शरीफ में प्रदेश के नागरिकों के सुख, समृद्धि और विकास की दुआ की जाएगी। इस अवसर पर रतलाम से श्रीमती यास्मिन शेरानी, चेयरमेन केएमसी फाउंडेशन हाजी इसरार अहमद जबलपुर, शहर काजी इंदौर डॉ. इशरत अली, नेता प्रतिपक्ष इंदौर सुश्री फौजिया शेख अलीम, पर्यवेक्षक कांग्रेस पार्षद दल श्री रफीक खान एवं पार्षदगण उपस्थित थे।

एसपी ने वारदातों को रोकने के लिए दिए निर्देश

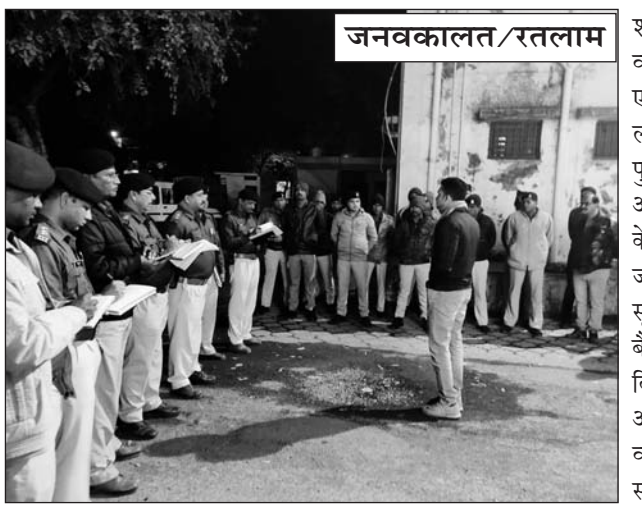

जनवकालत/रतलाम

शहर में लगातार हो रही वारदातों को रोकने को लेकर एसपी गौरव तिवारी विगत रात लगभग 11:30 बजे पुराने पुलिस कंट्रोल रूम पर पहुंचे और वहां पर सीएसपी, शहर के चारों थाना प्रभारी, जीआरपी थाना प्रभारी सहित सूचना संकलन कर्ताओं की बैठक लेकर आवश्यक निर्देश दिए। एसपी ने रात्रि कालीन और प्रात कालीन गश्त व्यवस्था को मजबूत करने के साथ ही सख्ती से वाहन चेकिंग के भी निर्देश दिए। एसपी गौरव तिवारी ने रात्रि कालीन गश्त के लिए पुलिस लाइन से अतिरिक्त बल उपलब्ध कराने के लिए भी कहा, वही सुबह के समय भी रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड एवं महत्वपूर्ण स्थानों पर पॉइंट लगाकर चेकिंग के निर्देश दिए ।एसपी गौरव तिवारी ने फिक्सड पॉइंट लगाकर चेकिंग के भी निर्देश दिए, ताकि किसी भी वारदात के होने पर तत्काल नाकेबंदी कर आरोपी को पकड़ा जा सके।

प्रतियोगिता! नन्हे-मुन्ने बच्चों के योगासन की अद्भुत क्रियाएं देखकर अचंभित हुए योग प्रेमी

जनवकालत/रतलाम

रतलाम जिले के नेतृत्व में राज्य स्तरीय योगासन खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता विगत दिवस बिरियाखेड़ी स्थित श्री गुरुनानक भवन हॉल में आयोजित हुई जो कि देर रात्रि तक चलती रही, प्रतियोगिता में प्रदेश के सैकड़ों बच्चों ने भाग लिया । प्रात से ही बच्चों में योगासन प्रतियोगिता को लेकर अद्भुत उत्साह देखने को मिला। प्रतियोगिता के दौरान बच्चों ने संगीत की स्वर लहरियों के बीच अपने अपने ग्रुप की शानदार प्रस्तुतियां दी। पतंजलि युवा भारत के जिला मीडिया प्रभारी मुकेश नैनानी ने बताया कि योगासन खेल प्रतियोगिता पतंजलि मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय योग सोसायटी, भोपाल युवा भारत मध्यप्रदेश पश्चिम रतलाम के तत्वावधान में स्वामी दयानंद सरस्वती की जयंती दिवस के अवसर पर आयोजित की जा रही हैं जिसके सहयोगी चेतन्य काश्यप फाउंडेशन एवं मुरलीवाला फाउंडेशन हैं । उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय सांसद गुमान सिंह डामोर, भारत स्वाभिमान के राज्य प्रभारी डॉ राजेंद्र आर्य, पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी श्री कृष्ण योगेंद्र रघुवंशी, प्रदेश युवा प्रभारी श्री प्रेम चौधरी, संरक्षक श्री प्रहलाद पटेल, महिला राज्य प्रभारी सुमन अग्रवाल, राज्य संवाद प्रभारी पिस्ता यादव, जिला महिला प्रभारी श्रीमती रश्मि राजे व्यास, मुरलीवाला फाउंडेशन के श्री रविंद्र पाटीदार, समाजसेवी श्री विष्णु भाग्यवानी, रतलाम पब्लिक स्कूल की संचालिका श्रीमती नीलम शर्मा, शालिनी मेम, समाजसेवी श्री अनोखीलाल कटारिया, श्री शांतिलाल

पाटीदार, श्री मनीष जैन आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में समाजसेवी श्री अनोखीलाल कटारिया एवं पावर ऑफ योगा की संचालिका रक्षिता सांकला द्वारा मध्यप्रदेश की आंगनबाड़ियों में अंडा वितरण प्रावधान के विरोध में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया।

सम्पादकीय

प्राय: देखा जा रहा है कि निर्वाचन आयोग भी चुनाव में सुधारों की अक्सर बात करता है तथा अधिक सुधार चुनाव की व्यवस्था तथा प्रक्रिया में किए भी गए हैं, परंतु पिछले वर्षो से चुनाव में ऐसे प्रत्याशी हर पार्टी द्वारा खड़े किए जाते हैं जिन पर आपराधिक गतिविधियों के मामले दर्ज हैं और मामले अदालत में चल रहे हैं। हर साल ऐसे प्रत्याशियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। जिनकी स्वच्छ छवि नहीं है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा भी इस प्रकार का निर्णय भी दिया गया है कि विभिन्न पार्टियों द्वारा चुनाव में उतारे गए प्रत्याशियों का पूरा विवरण देना होगा तथा उन पर किस प्रकार के अपराधिक मामले दर्ज है इसका विवरण भी बताना होगा। जिससे जनता को प्रत्याशियों के संबंध में पूरी जानकारी मिल सके। यह निर्णय स्वागत योग्य है। परंतु व्यवहारिक दृष्टि से देखा जा रहा है कि पिछले 15 वर्षो से पार्टी किसी सामान्य व्यक्ति की तुलना में जीतने की संभावना वाले व्यक्ति को ही चुनाव में टिकट देकर प्रत्याशी बनाती है, भले ही वह अपराधी क्यों ना हो। उनका तर्क यह भी रहता है कि अभी अपराध सिद्ध नहीं हुआ है। सालों मुकदमा चलता है और पेशियां होती रहती है, तब तक कार्यकाल भी पूरा हो जाता है। तथा सुविधाओं का लाभ लेते हुए सत्ता या विपक्ष में रहते हुए उम्मीदवार अपना दबदबा तथा प्रभाव भी बड़ा लेता है। वर्ष 2004 से 2019 के बीच की अवधि में ही संसद में पहुंचने वाले ऐसे सदस्यों की संख्या 125 से बढ़कर 236 हो गई है। उत्तर बिहार के 1 जिले का एक अपराधी किस्म का नेता जनता के आशीर्वाद से 4 बार लोकसभा की शोभा बढ़ा चुका है। बिहार में जिन अपराधियों पर मुकदमा चलता है उनमें से 100 में से 91 निरपराध छूट जाते हैं, जबकि केरल में 100 अपराधियों में से 91 को सजा मिलती है और केवल 9 ही निर्दोष छूट पाते हैं। सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि अपराधी चरित्र वाले प्रत्याशी को सही व्यक्ति की तुलना में क्यों टिकट दिया है यह राजनीतिक दलों को अपने विज्ञापन में बताना पड़ेगा। परंतु राजनीतिक दल के पास एक ही जवाब होगा कि हमारे प्रत्याशी को गलत तरीके से फंसाया गया है तथा उस पर कोई अपराध भी सिद्ध नहीं हुआ है। इस तरीके से तो राजनीति में अपराधीकरण की समस्या दूर ही नहीं हो सकेगी। वास्तव में संसद को ही चुनाव में सुधार के लिए पहल करना होगी तथा अपराध करने वालों को चुनाव में खड़े होने से रोकने का कानून बनाना होगा अन्यथा केवल विज्ञापनबाजी से सुधार संभव नहीं दिखता है। जनता को भी तार्किक दृष्टि से विचार कर भावना में बहने तथा प्रभाव में आने की बजाय विवेक से मतदान करने का संकल्प करना होगा तभी लोकतंत्र में सही प्रतिनिधियों का चुनाव हो सकता है।

राजेश झाला ए.रज़ाक

भक्ति रस

"दिन जिंदगी के गुजरते जाएंगे"

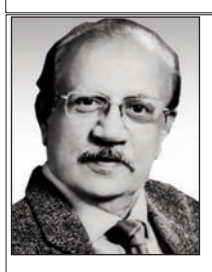

दिन जिंदगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

देखी है सूरत जब से, उसे प्यार करने
लगे हैं।
इनायत हुई जबसे उनकी, जिंदगी मानने
लगे हैं।।
उसकी आंखों में अश्कों के जो काँटे आए।
अधरों से हम अपने निकालते रहेंगे।।

दिन जिंदगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

उसके आने से हमारी तकदीर बदली है,
प्यार के फ्रेम में नई तस्वीर ढली है।
उसकी मरमरी बाँहों के सहारे,
मेरी गिरती दुनियां संभल चली है।।

तूफान ने जो बाँह छुड़ाने की कोशिश की।
उस तूफान को हम कुचलते रहेंगे।।

दिन जिंदगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

उसके पाक इन्तहा मोहब्बत हो गई मुझे,
कोई चाहे तो मेरा इम्तेहां भी ले ले।
जान ईमान देना कुछ भी नहीं मेरे लिए,
हार जाऊँ तो मेरे खुदा, मेरी माशुका ले ले।।

हर जनम ये दावा करते रहेंगे।
''इरा'' को प्यार करते है, करते रहेंगे।।

दिन जिदंगी के यूँ ही गुजरते जाएंगे।
''इरा'' को प्यार करते है करते रहेंगे।।

डॉ. (केप्टन) एन.के.शाह
शारदा पैथ लेब,
48, वेदव्यास कॉलोनी, रतलाम

ऐतिहासिक भाषा विज्ञान

भाषापरिवार...

गतांक से आगे....

भारतीय आर्य भाषाएं

इ. अपभ्रंश उपकाल

डॉ.जयकुमार जलज

इन उल्लेखों से स्पष्ट है कि छठी शताब्दी तक भाषाविशेष के अर्थ में अपभ्रंश शब्द का पर्याप्त प्रचलन हो गया था। इतना ही नहीं; अन्तिम दो उल्लेखों से यह भी स्पष्ट है कि अपभ्रंश भाषा में रचे गये साहित्य को पर्याप्त महत्त्व भी प्राप्त हो चला था। भामह ने उक्त पंक्ति में भाषा के आधार पर काव्य के तीन प्रकार- संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश कहे हैं। धरसेन द्वितीय उपर्युक्त पंक्ति में अपने पिता गुहसेन को संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की प्रबन्धरचना में निपुण घोषित करते हैं। घोषणा में उनका गर्व ध्वनित होता है। उक्त पंक्तियों में प्राकृत का अर्थ महाराष्ट्री प्राकृत है-इसी अर्थ में उसका अन्यत्र भी प्रयोग हुआ है। इस ष्टस् सबका अभिप्राय यह है कि अपभ्रंश का स्थान संस्कृत, प्राकृत (महाराष्ट्री) के साथ हैं।

पालि, पैशाची, शौरसेनी, मागधी आदि इरा सम्मानित पंक्ति से बाहर हैं। 9वीं शताब्दी में राजशेखर ने इस पावत में पैशाची को और बैठा दिया। लेकिन अपभ्रंश का स्थान जहाँ का तहाँ। उन्होंने राजाओं के कवि-दावार का चित्रण करते हुए राजसिंहासन के चारों ओर चार भाषाओं के कवियों के बैठने की व्यवस्था दी और. संकेत किया- उत्तर की ओर संस्कृत, पूर्व की ओर प्राकृत, पश्चिम की ओर अपभ्रंश और दक्षिण की ओर पैशाची भाषा के कवियों का स्थान निर्धारित है। यहाँ भी प्राकृत और पेशाची शब्दों का एक साथ प्रयोग इसी बात का समर्थन करता है कि प्राकृत का अर्थ महाराष्ट्री प्राकृत ही है।

भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में किसी भाषा को आभीरोक्ति कहा है। आगे चलकर दण्डी के कथन 'आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः' (काव्यों में आभीर आदि की भाषा को अपभ्रंश नाम से स्मरण किया जाता है) से सिद्ध होता है कि अपभ्रंश ही आभीर आदि जातियों की भाषा या आभीरोक्ति थी। आभीरों के अतिरिक्त गुर्जर, जिनके कारण गुजरात नाम पड़ा तथा ऐसी ही अन्य गोपालक जातियाँ अपभ्रंश भाषाभाषी थीं। गाय के पालन से सम्बन्धित इन जातियों में ही गौ शब्द के वे विभिन्न रूप प्रचलित हुए होंगे जिनका उल्लेख पतंजलि ने किया है। ये जातियाँ पश्चिमोत्तर भारत की थीं और धीरे-धीरे दक्षिण-पश्चिम भारत में फैल रही थीं। इनके राज्य भी स्थापित हो गये थे। इन जातियों के प्रसार और अन्य जातियों में इनके मिश्रण के कारण अपभ्रंश भाषा की आरम्भिक विशेषताएँ सबसे पहले भारत के पश्चिमी प्रदेश में ही प्रकट हुईं। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में जिस उकार-बहुला भाषा का उल्लेख किया है, उसका सम्बन्ध उन्होंने पश्चिमोत्तर भारत से ही जोड़ा है। **क्रमशः**

ऐतिहासिक भाषा विज्ञान पुस्तक के द्वितीय संस्करण से साभार

व्यंग्य आलेख

'बी.पी. रेखा'

गतांक से आगे..

वरिष्ठ विलाप

जब तक ये साठ के हुए तब तक पार्टी में किसी को युवा नहीं कहलाने दिया। साठ के पार हुए और अपनी ताकत के बल पर युवा आगे आ ही गए तो भी वरिष्ठों ने चैन नही लिया। वो तो थक हार कर इन्हें बैकफुट पर आना पड़ा। और अब चाहते हैं कि इन्हें वरिष्ठों का सम्मान मिले।' अपनी बिरादरी के कड़वे सच को बाहर आता देख विद्रोही जी के तेवर थोड़े नरम हुए। बोले, ' तो क्या हुआ। वरिष्ठ तो आखिर वरिष्ठ ही होता है। उसकी कोई उपेक्षा नहीं कर सकता।'

युवा छिछोरे ने फिर छेड़ा, 'लोग तो कह रहे हैं कि आप अपनी उपेक्षा से अधिक व्यथित हैं?'

इस बार विद्रोही जी का पारा सातवें आसमान पर चला गया। 'देखो छोकरे हम तो पुराने चावल हैं। हमने अच्छे-अच्छे को गिराया है और निकम्मों को भी नेता बनाया है। कोई हमारे बारे में उंगली नहीं उठा सकता है। हमारे काम और नाम के चर्चे आज भी देशभर में होते हैं। हम तो आखिर हम ही हैं।'

आशीष दशोत्तर

आत्ममुग्ध विद्रोही जी को देख युवा छिछोरेलाल को लगा कि दा साब तो सठियाने के साथ ही गठियाने के शिकार हो गए हैं। गठियाना मतलब जीवन भर उन्होंने जिसके लिए जो -जो गांठें बांधी थी उन्हें याद कर अपना शेष जीवन बिताना। उनकी इस पीड़ा से छिछोरे दुःखी भी था और उसे तरस भी आ रहा था। उसे लगा यह तो समय-समय का फेर है। कल तक दा साब ने किसी को आगे नहीं आने दिया और आज हालात ऐसे बन गए हैं कि दा साब को आगे आने के लिए हर तरह के हथकण्डे अपनाने पड़ रहे हैं। वरिष्ठ के इस विलाप पर पीड़ितों के चेहरों पर स्वतःमुस्कान बिखर रही थी।

निलम्बन महात्म्य

बड़े साहब ने जैसे ही ज्वाईन किया खब़रीलाल मिलने पहुंच गया। अपनी ही तरह वह भी निठल्ला। रोज साहब के दफ्तर के बाहर चक्कर लगाने वाला खब़री आज साहब के सामने बैठा था। अपना व्यर्थ सा परिचय देते हुए साहब से सवाल करने लगा। अपन को लगा यह बातचीत आपके वर्तमान के संतोश एवं भविष्य की निष्चिंतता के लिए जरूरी है। सो आप भी इस बातचीत का आनंद लें।

आपका नए जिले में स्वागत है। यह नया जिला है क्या? मैंने तो सुना था काफी पुराना है।

नए से मतलब आपके लिए। अपने लिए क्या नया और क्या पुराना।

क्रमशः

पुस्तक- बी.पी रेखा।

श्रद्धा के फूल

गतांक से आगे....

पुर्नमिलन

सचिन का अपहरण करने वाले चारों बदमाश पकड़े जा चुके थे, उन्होंने कबूल कर लिया था कि वे बच्चे का अपहरण करके फिरौती वसूल करना चाहते थे। उनसे यह भी मालूम हुआ कि वे पहले भी इसी प्रकार की वारदात कर चुके थे। बदमाशों के बयान सुनने के बाद सचिन के पिता ने अपना ट्रांसफार भोपाल करने हेतु आवेदन कर दिया था। वे सचिन की फिरौती का सोचकर बहुत डरे हुए थे।

कुछ दिन पश्चात सचिन के पिताजी का ट्रांसफर भोपाल हो गया तथा उन्होंने भोपाल में किराये से एक मकान भी ले लिया था। जब उनका सामान ट्रक में जाने लगा तो सचिन ने पिताजी से कहा कि पापा मोती को भी साथ ट्रक में ले चलें, किन्तु मम्मी-पापा इसके लिए तैयार नहीं हुए। .

उन्होंने कहा-बेटा, वहाँ नया मकान है। मकान मालिक भी साथ रहता है। वह किसी भी हालत में मोती को नहीं रखने देगा। अतः अब तुम्हें मोती से मोह छोड़ना पड़ेगा और चुपचाप रात की गाड़ी से निकल जाना है, अन्यथा वह दौड़ता हुआ आजायेगा।

सचिन बहुत उदास हो गया। मोती भी समझ गया था कि कुछ बात है। आज सचिन उससे ज्यादा बात नहीं कर रहा है, फिर भी वह सचिन के आगे-पीछे फिरता रहा।

जिस जानवर को हम प्यार करते है, जब उसको छोड़ते है तब जानवर को भी आभास होने लगता है कि मेरा मालिक मुझसे विमुख हो रहा है, जैसे पाली हुई गाय को बेचते समय गाय को भी यह आभास हो जाता है कि उसे बेचा जा रहा है। .

भोपाल गाड़ी रात्रि के एक बजे के बाद जाती थी। अतः सचिन का पूरा परिवार चुपचाप टू सीटर में बैठकर स्टेशन निकल गये। उन्होंने देखा कि मोती सो रहा है तथा वे रेलगाड़ी में बैठकर सुबह 8 बजे भोपाल पहुँच गये। मोती के बिना सचिन भारी उदास था किन्तु क्या करता और कोई उपाय ही नहीं था। मोती को साथ लाना संभव ही नहीं था।

हरिशंकर भटनागर

धीरे-धीरे समय गुजरने लगा। मोती की याद सचिन के दिल से जाने लगी। उसका मन पढ़ाई में लगने लगा। अब उसके कई मित्र बन गये थे। कभी-कभी किसी कुत्ते को देखता तो सोचता हमारे आने के बाद मोतीने हमें न जाने कहाँ-कहाँ ढुंढा होगा। शायद स्कूल भी गया होगा। उसके पिता ने एक दिन अपने पुराने मकान मालिक से बात की तो उसने बताया कि आपके जाने के बाद मोती किसी भीटू सीटर के पीछे दौड़ता था। शायद सोचता था कि किसी टू सीटर में सचिन हो, फिर वह बहुत दिनों तक उदास पड़ा रहता।

कुछ दिन बाद पता नहीं वह कहाँ चला गया अब कहीं भी दिखाई नहीं देता।

सचिन की माँ को भी मोती की याद रह-रहकर आती रही।

क्रमशः

पुस्तक- मन की आवाज कहानियां

महाबली और वामन अवतार की कथा

गतांक से आगे... महाबली गुरु के शब्दों को सुनते थे और अपनी बात पर अटल रहे और कहा 'मुझे वैभव खोने का भय नही है बल्कि अपन प्रभु को खोने का भी है इसलिए मैं उनकी इच्छा पुरी करना चाहता हूं।' ये कहकर महाबली वहा से चला गया।

महाबली फिर से उस बालक के पास गया और स्नेह से कहा 'मान्यवर, मैं आपकी बात बीच में छोडकर जाने के लिए क्षमा चाहता हूं इसलिए अब आप अपनी इच्छा बताइये।' उस बालक ने महाबली की और शांत स्वभाव से देखा और कहा 'मुझे केवल तीन पग जमीन चाहिए जिसे मैं अपने पैरो से नाप सकू।'

महाबली ने जैसा सोचा वैसा नही हुआ क्योंकि वो सोच रहा था कि वो उसके प्राण मांगेगे। महाबली ने हँसते हुए कहा 'केवल तीन पग जमीन चाहिये मैं तुमको दूँगा'।

बालक ने उसे बीच में रोकते ही कहा 'अगर कोई व्यक्ति केवल तीन पग से संतुष्ट नही हो सकता तो वो किसी से भी संतुष्ट नही हो सकता, महाराज मेरी केवल यही इच्छा पुरी कर दीजिये।'

उस बालक को देखकर महाबली में चुम्बकीय प्रभाव आया और उसने सिर हिलाया और कहा 'आप तीन पग जमीन माप कर ले लीजिये'।

जैसे ही महाबली ने अपने मुह से ये शब्द निकाले वामन का आकार बढ़ गया और धीरे धीरे बढ़ता ही गया। वो बालक इतना बढ़ गया कि बाली केवल उसके पैरो को देख सकता था। वामन आकार में इतना बड़ा था कि कि धरती को उसने अपने एक पग में माप लिया।

दुसरे पैर में उस दिव्य बालक ने पूरा आकाश नाप लिया। भगवान विष्णु के इस विशाल अवतार को त्रिविक्रम अवतार कहते है। महाबली भगवान के इस चमत्कार को देखकर स्त्ब्ध रह गया। अब उस बालक ने महाबली को बुलाया 'महाराज, आपने मुझे तीन पग जमीन देने का वचन दिया था और मैंने अपने दो पगों में धरती और आकाश को नाप लिया है। अब मुझे अपना तीसरा कदम रखने के लिए कोई जगह नही बची, तुम बताओ मैं अपना तीसरा कदम कहा पर रखूं।'

महाबली ने उस बालक की बात सुनते हुए मुस्कुराकर कहा 'प्रभु , मैं वचन तोड़ने वालो में से नही हु आप तीसरा कदम मेरे शीश पर रखिये'।

क्रमशः

प्रस्तुति- हितेन्द्र जोशी
रतलाम

हिंदी सिनेमा में पहली बार

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ बॉलीवुड डॉयरीज

जनवकालत

''कलाकारों की प्रथम फिल्म''

»»बप्पी लहरी- (संगीत-निर्देशक)- 'जख्मी'।

»»असीन- 'गजनी'।

»»नरगिस फकरी- 'रॉकस्टार'।

»»परिणीती चौपड़ा- 'लेडिज वर्सेज रिक्की बहल' (2011)।

»»सोनाक्षी सिन्हा- 'दबंग'।

»»1938 से 'क्रॉनिकल' के फिल्म- समीक्षक की हैसियत से ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'फार्मूला' फिल्मों की धज्जियाँ उड़ानी शुरू की।

»»1940 में अब्बास ने 'नया संसार' की पटकथा लिखी।

»»हिंदी फिल्म- जगत में 'नवयथार्थवाद' के प्रवर्तक- 'अब्बास'।

»»कंगना राणावत- 'गैंगस्टर' (2006)।

»»पूनम पाण्डे- 'नशा'।

»»क्रिस्टीना अरवीना- 'यमला पगला दीवाना'- पार्ट- 2।

»»मधुबाला के जीवन में एक शख्स ऐसा भी आया था, जिसने मधुबाला द्वारा दिया गया विवाह का प्रस्ताव बड़ी निष्ठुरता से ठुकरा दिया था। वे व्यक्ति थे 1940-1950 के दशक के मशहूर संगीतकार एस. मोहिंदर।

»»ऋचा चड्ढा- 'ओए लकी-लकी ओए' दिवाकर बनर्जी।

»»सुचेता खन्ना- 'अनजान-अनजानी'।

»»बतौर संगीतकार खय्याम की पहली फिल्म- 'हीरा-रांझा' (1948) इसमें रहमान वर्मा के साथ संगीत था।

»»प्रीति झिंगयानी- 'मोहब्बते'।

»»ऋतुपर्णा घोष- प्रथम हिंदी फिल्म- 'रेनकोट'।

»»रेमिल डीसिटवा- (राइटर डॉयरेक्टर) 'कुर्बान' (2009)।

»»सिद्धार्थ मल्होत्रा- 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' (2012)।

»»आलिया भट्ट- 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' (2012)।

»»बतौर गीतकार डॉ. धनीराम प्रेम की पहली फिलम- 'दो बदमाश'।

»»संदेश शांडिल्य (संगीतकार) 'कभी खुशी कभी गम' (2011)।

»»सोनल चौहान 'जन्नत' (2008)।

»»अर्जुन कपूर 'इश्क जादे'।

»»इंग्लिश अभिनेत्री व ड्रेस डिजाइनर फागुन 'भोपालः अ प्रेयर फॉर रेन'।

»»देवेन वर्मा की पहली बड़ी फिल्म- 'देवर'।

»»एलिना कजन- 'क्लर्ग' (बंगाली)।

»»'प्राग' (हिंदी)।

»»उदिता गोस्वामी- 'पाप'।

»»मोनिका डोगरा- 'धोबीघाट'।

»»1960 में प्रदर्शित मो. सादिक निर्देशित 'चौदहवीं का चांद' के गीत 'मिली खाक में मोहब्बत..... जला दिल का....'' के गायन के लिए मो. रफी को पहला फिल्म फेयर पुरस्कार मिला।

जुबैर आलम कुरैशी

»»1960 में रिलीज हुई 'जीवन नैया' बतौर गायक एस.एन. त्रिपाठी प्रथम फिल्म।

»»अशोक कुमार- 'जीवन-नैया'।

»»राजश्री प्रोडक्शन की शुरूआत- 1962।

»»पहली फिल्म 'आरती' (निर्माता फणी मजमूदार)।

»»मिलिंद 'मिस्टर प्राइम मिनिस्टर'।

»»'विकी डॉनर' से बॉलीवुड में अपनी उपस्थिति का एहसास कराया, यामी गौतम ने।

»»धनुष की पहली फिल्म- (हिंदी)-'रांझणा'।

»»इशिता व्यास- 'पीपली लाइव'।

»»ओमप्रकाश मेहरा 'अक्स'।

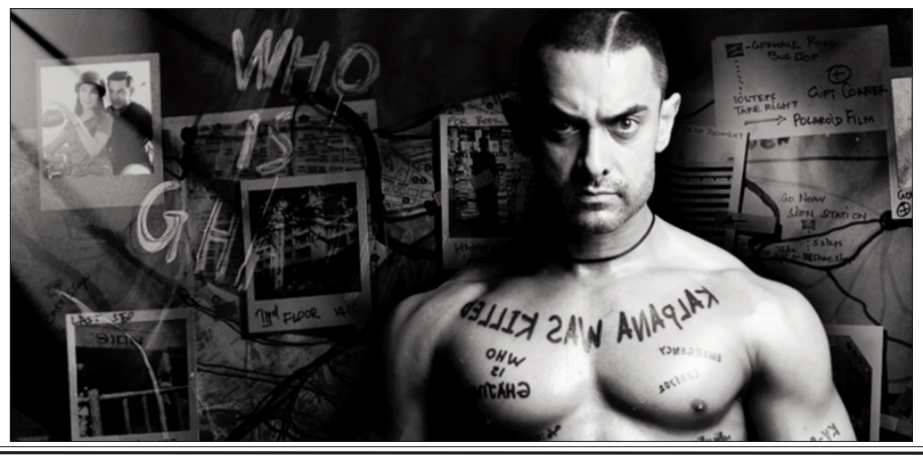

सम्पर्क-
9981426313

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना, हिन्दी है हम, वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा...

जैन धर्म

जैन दर्शन (उदभव और विकास)

गतांक से आगे....

जैन दर्शन

आचार्य गृद्धपिच्छ समय काल

इस सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध इतिहासकार स्वर्गीय पंडित जुगलकिशोर मुख्तार ने अपने विस्तृत लेखों में अनेक प्रमाण देकर यह स्पष्ट किया है कि स्वामी समन्तभद्र 'तत्त्वार्थ सूत्र' के दर्ता आचार्य उमास्वामी के पश्चात एवं पूज्यपाद स्वामी के पूर्व हुए हैं। अतः ये असन्दिग्ध रूप से विक्रम की दूसरी-तीसरी शताब्दी के महान् विद्वान थे। अभी समन्तभद्र के सम्बन्ध में यही विचार सर्वमान्य माना जा रहा है।

अपवाद

संसार की मोह ममता से दूर रहने वाले अधिकांश जैनाचार्यों के माता-पिता तथा जन्म स्थान आदि का कुछ भी प्रमाणिक इतिहास उपलब्ध नहीं है। समन्तभद्र स्वामी भी इसके अपवाद नहीं है। श्रवणबेलगोला के विद्वान दौर्बलिजिनदास शास्त्री के शास्त्र भंडार में सुरक्षित 'आप्तमीमांसा' की एक प्राचीन ताड़पत्रीय प्रति के निम्नांकित पुष्पिकावाक्य से स्पष्ट है कि समन्तभद्र फणिमंड्लान्तर्गत उरगपुर के राजा के पुत्र थे-

''इति श्री फणिमंडलालंकार स्योरगपुराधिपसूनोः श्रीस्वामी समन्तभद्रमुनेः कृतौ आप्तमीमांसायाम''

इसके आधार पर उरगपुर समन्तभद्र की जन्मभूमि अथवा बाल क्रीड़ा भूमि होती है। यह उरग्पुर ही वर्तमान का 'उरैयूर' जान पड़ता है। उरगपुर चोल राजाओं की प्रचीन राजधानी रही है। पुरानी त्रिचनापल्ली भी इसी को कहते हैं। समन्तभद्र का प्रारम्भिक नाम 'शान्तिवर्मा' था। दीक्षा के पहले आपकी शिक्षा या तो उरैयूर में हुई अथवा कांची या मदुरै में हुई जान पड़ती है, क्योंकि ये तीनों ही स्थान उस समय दक्षिण भारत में विद्या के मुख्य केन्द्र थे। इन सब स्थानों में उस समय जैनियों के अच्छे-अच्छे मठ भी मौजूद थे।

क्रमशः

पुराण! मनुष्य के भूत, भविष्य, वर्तमान का दर्पण

गतांक से आगे.....

वेद

वेद का स्वरूप

वेद के भाग

अर्थवाद

किंतु इस कार्य (प्रशंसा और निन्दा)- में अर्थवाद मुख्यार्थद्वारा अपने तात्पर्यार्थ की अभिव्यक्ति नहीं करता, अपितु शब्द की लक्षणा शक्ति का आश्रय ग्रहण करता है। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि मीमांसक-दृष्टि से समस्त वेद क्रियापरक है तथा यागादि क्रिया द्वारा ही अभीष्ट-प्राप्ति एवं अनिष्टका परिहार किया जा सकता है। यतः स्वाध्यायोऽध्येतव्यः इस विधान से वेद के अन्तर्गत ही अर्थवाद भी है, अतः उनको भी क्रियापरक मानना उचित है। जैसा कि पहले कहा गया है कि अर्थवाद का प्रयोजन विधेयकी प्रशंसा एवं निषिद्ध की निन्दा में प्रकट होता है। विधान एवं निषेध क्रिया का ही होता है, अतः परम्परया अर्थवाद-वाक्य

क्रिया (याग या धर्म) परक होते हैं, अतएव उनका प्रामाण्य एवं उपादेयता सर्वथा सिद्ध है। इसी बात को आचार्य जैमिनि ने इन शब्दों में कहा है- विधिना त्वेकवाक्यत्वात् स्तुत्यर्थेन विधीनां स्युः। उन्नीसवीं शती के पूर्वार्ध के बाद से पाश्चात्य नव्य वेदार्थ- विचार कों- बर्गाइन आदि ने भारतीय चिन्तन की इस दृष्टि को समझा तथा उसके आलोक में नये सिरे से वेदार्थ-विचार में दृष्टि डाली।

प्राशस्त्य और निन्दा से सम्बन्धित अर्थवाद-वाक्य क्रमशः विधिशेष एवं निषेधशेष-रूप से अभिहित किये गये हैं। विधि अर्थात विधायक वाक्य, शेष- अर्थवाद-वाक्य दोनों मिलकर एक समग्र वाक्य की रचना करते हैं, जो कि विशिष्ट प्रभावोत्पादक बनता है। उदाहरणार्थ- 'वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकामः' यह विधि-वाक्य है। इसका शेष-अर्थवाद वाक्य है- 'वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता'। यहाँ वायु की प्रशंसा विधिशेषात्मक अर्थवाद से गयी है। उपर्युक्त दोनों वाक्यों की एकवाक्यता करके लक्षणा द्वारा यह विदित होता है कि वायुदेवता शीघ्रगामी हैं, अतः वे ऐश्वर्य भी शीघ्र प्रदान करते हैं। अब इस विशिष्ट प्रभावोत्पादक अर्थ को सुनकर अधिकारी व्यक्ति की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार निषेध-शेषात्मक अर्थवाद का भी साफल्य जानना चाहिये।

क्रमशः

सिख धर्मकोश

गतांक से आगे..

गुरु गोविन्द की माँग

गुरु गोविन्द सिंह ने उनका आदर, सत्कार किया और उनके भोजन तथा विश्राम निवास का समुचित प्रबंध किया। प्रमुख सभा के दिन गुरु गोविन्द सिंह जनसमुदाय के सम्मुख नंगी तलवार लिए हुए आये और बोले- 'भाइयों, आज देवी दुर्गा ने बलिदान माँगा है। क्या आप में से कोई ऐसा वीर है, जो देवी की प्रसन्नता के लिए अपना सिर दे सके'।

पाँच वीरों का बलिदान

सभा में कुछ देर सन्नाटा छाया रहा। गुरुजी ने फिर कहा- 'क्या देवी की माँग पूरी नहीं होगी? तभी एक तीस वर्षीय तरुण उठा और बोला- 'मैं अपना सिर देवी को भेंट करने को तैयार हूँ।' यह लाहौर के निवासी भाई दयाराम खत्री थे। गुरु गोविन्द सिंह उन्हें एक तंबू में ले गये और एक मुहूर्त ही में लोगों ने तंबू के बाहर रक्त की धारा बहते हुए देखी। गुरु गोविन्द सिंह फिर हाथ में रक्त से सनी तलवार लेकर आये और बोले- 'देवी और बलिदान चाहती हैं। क्या दूसरा कोई व्यक्ति अपना सिर देने को तैयार है?' तभी तैंतीस वर्षीय दिल्ली निवासी भाई धर्मसिंह जाट ने आगे आकर सिर झुका दिया। गुरुजी उन्हें भी तंबू में ले गये और रक्त की दूसरी धार बहती दिखाई दी। तीसरी बार गुरुजी ने आकर फिर वही माँग की। अब की बार 36 वर्षीय मोहकमचंद धोबी आगे आये। गुरु उनको भी तंबू में ले गये और एक बार फिर तंबू के बाहर रक्त की धार बहती दिखाई दी। इसी प्रकार गुरु गोविन्द सिंह ने दो बार और आकर बलिदान की माँग की और दोनों बार क्रम से सैंतीस वर्षीय बीदर निवासी भाई साहबचंद नाई और 38 वर्षीय जगन्नाथ निवासी भाई हिम्मतराय कुम्हार ने अपना सिर देना स्वीकार किया और दोनों की वही दशा हुई जो प्रथम तीन की हुई थी। इस बलिदान भावना से सारा जनसमूह उमड़ पड़ा और गुरुजी से कहने लगा कि- 'हमारा सिर लीजिए, हमारा सिर लीजिए'।

क्रमशः

परिचय- मसीही धर्म और प्रभु यीशु

गतांक से आगे...

ईसाई धर्म कोश

ईसाई धर्म का प्रचार

ऐंग्लिकन समुदाय

इतिहास- एलिजाबेथ के समय में प्युरिटन दल का उदय हुआ किंतु वह विशेष रूप से जेम्स प्रथम (सन् 1603-25 ई.) तथा चार्ल्स प्रथम (सन् 1625-1649 ई.) के राज्यकाल में सक्रिय था। प्युटिन दल ऐंग्लिकन चर्च को प्रोटेस्टैंट धर्म के अधिक निकट ले जाना चाहता था।

वह कुछ समय तक सर्वोपरि रहा तथा सन् 1643 ई. में पार्लियामेंट द्वारा बिशप की पदवी का उन्मूलन कराने में समर्थ हुआ। यह परिस्थिति सन् 1660 ई. तक बनी रही। ऐंग्लिकन चर्च का इतिहास आगे चलकर प्रधानतया इसकी विभिन्न विचारधाराओं का उतार-चढ़ाव है। यहाँ पर ऐक्ट ऑव सक्सेशन का उल्लेख करना जरूरी है जिसके अनुसार इंग्लैंड के भावी राजाओं का ऐंग्लिकन होना अनिवार्य ठहराया गया है। (सन् 1701 ई.)।

सिद्धांत- रोम से अलग हाते हुए भी ऐंग्लिकन चर्च अपने को काथलिक चर्च का अंग मानता है। सैद्धांतिक दृष्टि से उसका स्थान रोमन काथलिक चर्च तथा प्रोटेस्टैंट धर्म के बीच में है। इसी में ऐंग्लिकन चर्च का विशेष महत्व है और इसी कारण उसे **'ब्रिज चर्च'** की उपाधि दी गई है क्योंकि वह पुल की भाँति दोनों के बीच में स्थित है। वह प्रोटेस्टैंट धर्म के समान रोम के विशप का अधिकार अस्वीकार करता है किंतु वह रोमन काथलिक चर्च की भाँति सिखलाता है कि बाइबिल ईसाई धर्म का एकमात्र आधार नहीं है। बाइबिल के अतिरिक्त वह काथलिक गिरजे की प्रथम चार महासभाओं के निर्णय भी स्वीकार करता है तथा बाइबिल की व्याख्या में गिरजे की प्राचीन परंपरा को बहुत महत्व देता है। फिर भी वह धार्मिक शिक्षा के संबंध में सैद्धांतिक एकरूपता के प्रति एक प्रकार से उदासीन है। फलस्वरूप ऐंग्लिकन चर्च में प्रायः प्रारंभ से ही कई विचारधाराओं अथवा दलों का अस्तित्व रहा है।

क्रमशः

#महाशिवरात्रि! सूर्य देव के उत्तरायण में आने पर ऋतु परिवर्तन का अत्यंत शुभ समय

महाशिवरात्रि अथवा शिवरात्रि हिन्दु संस्कृति का एक प्रमुख त्योहार है। इसे शिव चौदस या शिव चतुर्दशी भी कहा जाता है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। महाशिवरात्रि पर रुद्राभिषेक का बहुत महत्त्व माना गया है और इस पर्व पर रुद्राभिषेक करने से सभी रोग और दोष समाप्त हो जाते हैं। शिवरात्रि हर महीने में आती है परंतु फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को ही महाशिवरात्रि कहा गया है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार सूर्य देव भी इस समय तक उत्तरायण में आ चुके होते हैं तथा ऋतु परिवर्तन का यह समय अत्यन्त शुभ कहा गया है।

शिवरात्रि से आशय

शिवरात्रि वह रात्रि है जिसका शिवतत्त्व से घनिष्ठ संबंध है। भगवान शिव की अतिप्रिय रात्रि को शिव रात्रि कहा जाता है। शिव पुराण के ईशान संहिता में बताया गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में आदिदेव भगवान शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले लिंग रूप में प्रकट हुए-

फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः॥

शिव

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि में चन्द्रमा सूर्य के समीप होता है। अतः इसी समय जीवन रूपी चन्द्रमा का शिवरूपी सूर्य के साथ योग मिलन होता है। अतः इस चतुर्दशी को शिवपूजा करने से जीव को अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। यही शिवरात्रि का महत्त्व है। महाशिवरात्रि का पर्व परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का मंगल सूचक पर्व है। उनके निराकार से साकार रूप में अवतरण की रात्रि ही महाशिवरात्रि कहलाती है। हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि विकारों से मुक्त करके परमसुख, शान्ति एवं ऐश्वर्य प्रदान करते हैं।

महाशिवरात्रि

किसी मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी 'शिवरात्रि' कही जाती है, किन्तु माघ (फाल्गुन, पूर्णिमान्त) की चतुर्दशी सबसे महत्त्वपूर्ण है और महाशिवरात्रि कहलाती है। गरुड़पुराण, स्कन्दपुराण, पद्मपुराण, अग्निपुराण आदि पुराणों में उसका वर्णन है। कहीं-कहीं वर्णनों में अन्तर है, किंतु प्रमुख बातें एक सी हैं। सभी में इसकी प्रशंसा की गई है। जब व्यक्ति उस दिन उपवास करके बिल्व पत्तियों से शिव की पूजा करता है और रात्रि भर 'जारण' (जागरण) करता है तो शिव उसे नरक से बचाते हैं और आनन्द एवं मोक्ष प्रदान करते हैं और व्यक्ति स्वयं शिव हो जाता है। दान, यज्ञ, तप, तीर्थ यात्राएँ, व्रत इसके कोटि अंश के बराबर भी नहीं हैं।

गरुड़ पुराण में कथा

गरुड़ पुराण में इसकी गाथा है- आबू पर्वत पर निषादों का राजा सुन्दर सेनक था, जो एक दिन अपने कुत्ते के साथ शिकार खेलने गया। वह कोई पशु मार न सका और भूख-प्यास से व्याकुल वह गहन वन में तालाब के किनारे रात्रि भर जागता रहा। एक बिल्ब (बेल) के पेड़ के नीचे शिवलिंग था, अपने शरीर को आराम देने के लिए उसने अनजाने में शिवलिंग पर गिरी बिल्व पत्तियाँ नीचे उतार लीं। अपने पैरों की धूल को स्वच्छ करने के लिए उसने तालाब से जल लेकर छिड़का और ऐसा करने से जल की बूँदें शिवलिंग पर गिरीं, उसका एक तीर भी उसके हाथ से शिवलिंग पर गिरा और उसे उठाने में उसे शिवलिंग के समक्ष झुकना पड़ा। इस प्रकार उसने अनजाने में ही शिवलिंग को नहलाया, छुआ और उसकी पूजा की और रात्रि भर जागता रहा। दूसरे दिन वह अपने घर लौट आया और पत्नी द्वारा दिया गया भोजन किया। आगे चलकर जब वह मरा और यमदूतों ने उसे पकड़ा तो शिव के सेवकों ने उनसे युद्ध किया और उसे उनसे छीन लिया। वह पापरहित हो गया और कुत्ते के साथ शिव का सेवक बना। इस प्रकार उसने अज्ञान में ही पुण्यफल प्राप्त किया। यदि इस प्रकार कोई भी व्यक्ति ज्ञान में करे तो वह अक्षय पुण्यफल प्राप्त करता है।

अग्नि पुराण, स्कन्द पुराण में कथा

अग्नि पुराण में सुन्दरसेनक बहेलिया का उल्लेख हुआ है। स्कन्द पुराण में जो कथा आयी है, वह लम्बी है- चण्ड नामक एक दुष्ट किरात था। वह जाल में मछलियाँ पकड़ता था और बहुत से पशुओं और पक्षियों को मारता था। उसकी पत्नी भी बड़ी निर्मम थी। इस प्रकार बहुत से वर्ष बीत गए। एक दिन वह पात्र में जल लेकर एक बिल्व पेड़ पर चढ़ गया और एक बनैले शूकर को मारने की इच्छा से रात्रि भर जागता रहा और नीचे बहुत सी पत्तियाँ फेंकता रहा। उसने पात्र के जल से अपना मुख धोया, जिससे नीचे के शिवलिंग पर जल गिर पड़ा। इस प्रकार उसने सभी विधियों से शिव की पूजा

की, अर्थात् स्नापन किया (नहलाया), बेल की पत्तियाँ चढ़ायीं, रात्रि भर जागता रहा और उस दिन भूखा ही रहा। वह नीचे उतरा और एक तालाब के पास जाकर मछली पकड़ने लगा। वह उस रात्रि घर नहीं जा सका था, अतः उसकी पत्नी बिना अन्न-जल के पड़ी रही और चिन्ताग्रस्त हो उठी। प्रातःकाल वह भोजन लेकर पहुँची, अपने पति को एक नदी के तट पर देख, भोजन को तट पर ही रख कर नदी को पार करने लगी। दोनों ने स्नान किया, किन्तु इसके पूर्व कि किरात भोजन के पास पहुँचे, एक कुत्ते ने भोजन चट कर लिया। पत्नी ने कुत्ते को मारना चाहा किन्तु पति ने ऐसा नहीं करने दिया, क्योंकि अब उसका हृदय पसीज चुका था। तब तक (अमावस्या का) मध्याह्न हो चुका था। शिव के दूत पति-पत्नी को लेने आ गए, क्योंकि किरात ने अनजाने में शिव की पूजा कर ली थी और दोनों ने चतुर्दशी पर उपवास किया था। दोनों शिवलोक को गए। पद्म पुराण में इसी प्रकार एक निषाद के विषय में उल्लेख हुआ है।

शिव भक्तों का महापर्व

महाशिवरात्रि का पर्व शिवभक्तों द्वारा अत्यंत श्रद्धा व भक्ति से मनाया जाता है। यह त्योहार हर वर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चौदहवीं तिथि को मनाया जाता है। अंग्रेजी कलेंडर के अनुसार यह दिन फरवरी या मार्च में आता है। शिवरात्रि शिव भक्तों के लिए बहुत शुभ है। भक्तगण विशेष पूजा आयोजित करते हैं, विशेष ध्यान व नियमों का पालन करते हैं। इस विशेष दिन मंदिर शिव भक्तों से भरे रहते हैं, वे शिव के चरणों में प्रणाम करने को आतुर रहते हैं। मन्दिरों की सजावट देखते ही बनती है। हजारों भक्त इस दिन कावड़ में गंगा जल लाकर भगवान शिव को स्नान कराते हैं।

महादेव शिव के पूजन का महापर्व

भारतीय त्रिमूर्ति के अनुसार भगवान शिव प्रलय के प्रतीक हैं। त्रिर्मूति के दो और भगवान हैं, विष्णु तथा ब्रह्मा। शिव का चित्रांकन एक रूद्र भाव द्वारा किया जाता है। ऐसा प्रतीकात्मक व्यक्ति भाव, जिसके मस्तक पर तीसरी आंख है; जो जैसे ही खुलती है, अग्नि का प्रवाह बहना प्रारम्भ हो जाता है। पुराणों के अनुसार जब कामदेव ने शिव के ध्यान को तोडने की चेष्टा की थी, तो शिव का तीसरा नेत्र खोलने से कामदेव जलकर राख हो गया था।

क्रमशः

''सांप के फन, मक्खी के मुख और बिच्छु के डंक में जहर होता है, पर दुष्ट व्यक्ति तो इससे भरा होता हैं।''

बच्चों और विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के लिए आवश्यक है करियर काउंसलिंग

करियर काउंसलिंग (छात्र मार्गदर्शन) आज के समय में बहुत उपयोगी हो गई है। 10वीं करते समय बहुत से स्टूडेंट कन्फ्यूज होते हैं। वह समझ नहीं पाते कि भविष्य में किस विषय की पढ़ाई करें। आर्ट्स विषयों से पढ़े या विज्ञान विषयों से।

कॉमर्स विषय से अध्ययन करें या कोई विशेष ट्रेनिंग, डिग्री, डिप्लोमा करें। बहुत बार देखा गया है कि मां बाप अपनी इच्छाओं को बच्चों पर थोपते हैं। वे बच्चों को कुछ और बनाना चाहते हैं जबकि बच्चे कुछ और बनना चाहते है। इन सारी चीजों को लेकर एक भारी कंफ्यूजन की स्थिति बन जाती है।

इस कंफ्यूजन को दूर करने के लिए करियर काउंसलिंग आजकल होने लगी है जिसमें छात्रों की रूचि और योग्यता के अनुसार काउंसलर उन्हें सही कोर्स के बारे में बताता है। यह भी बताता है कि कौन सा कोर्स किस बच्चे के लिए अच्छा होगा।

करियर काउंसलिंग का महत्व

सही स्ट्रीम चुनने का मौका मिलता है

काउंसलिंग कराने का सबसे अच्छा फायदा है कि बच्चों के लिए कौन सी स्ट्रीम सही है यह पता चलता है। 10वीं, 12वीं स्नातक और परस्नातक में सही कोर्स चुनने का मौका मिलता है। आपके बच्चे को आर्ट्स, साइंस या कामर्स से पढ़ना चाहिए इसकी जानकारी होती है। ध्यान देने वाली बात है कि बच्चों की रुचि के अनुसार ही उनकी पढ़ाई होनी चाहिए। सही स्ट्रीम का चुनाव होना बहुत आवश्यक है। बहुत से बच्चे गलत स्ट्रीम चुन लेते हैं जो उनकी रुचि से मेल नहीं खाती है। और वह पढ़ाई में अच्छा परफारमेंस नहीं कर पाते हैं। इसका नतीजा होता है कि उनके कम नंबर आते हैं और भविष्य में उन्हें नौकरी पाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

अभिभावक बच्चों की रुचि को समझ पाते हैं

कई अभिभावक बच्चों की रुचि को नहीं समझना चाहते हैं। वे अपनी इच्छा अनुसार बच्चे को पढ़ाना चाहते है। कुछ अभिभावक तो बच्चों के जन्म पर ही सोच लेते हैं कि बच्चों को इंजीनियर, डॉक्टर, टीचर, वैज्ञानिक बनाएंगे। यह सोच सही नहीं है। बच्चों को पढ़ने का अवसर उनकी रूचि के अनुसार मिलना चाहिए। जिस विषय में उनकी रुचि हो वही विषय उन्हें

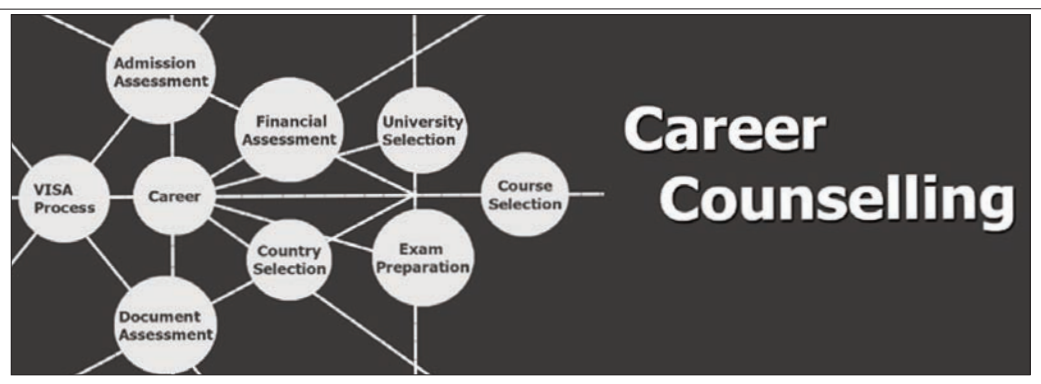

दिलाने चाहिए। काउंसलिंग के दौरान काउंसलर बच्चे से अच्छी तरह पूछते हैं कि किन विषयों में उसकी रूचि है। कुछ टेस्ट करके भी यह पता लगाया जा सकता है कि किस विषय में बच्चे की रूचि है।

बेहतर तरह से भविष्य की तैयारी

करियर काउंसलिंग का सबसे बड़ा फायदा है कि आप बच्चे के बेहतर भविष्य की तैयारी कर सकते हैं। हर अभिभावक का सपना होता है कि उसका बच्चा आगे चलकर बड़ा अफसर, अधिकारी बने। उसे अच्छी नौकरी मिले। वह ढेर सारे पैसे कमाए और उसका जीवन खुशियों से भर जाये। पर यह सब इतना आसान नहीं है। यदि आपका बच्चा कोई गलत कोर्स कर रहा है जो उसकी योग्यताओं से मेल नहीं खाता है तो वह आगे चलकर अच्छी नौकरी नहीं पा सकेगा। यह बहुत जरूरी है कि बच्चे को उसकी योग्यता के अनुसार पढ़ाई करवाई जाए। उदाहरण के लिए यदि बच्चे को कंप्यूटर में इंटरेस्ट है तो उसे कंप्यूटर से संबंधित कोर्स जैसे- बीटेक इन कंप्यूटर साइंस, बीसीए, एमसीए करवाया जा सकता है।

बहुत सारे कोर्सेज में से सही कोर्स का चुनाव करना

करियर काउंसलिंग का सबसे अच्छा फायदा यह है कि यह आपको दुविधा और कंफ्यूजन से बचाता है। आजकल एमबीए, होटल, मैनेजमेंट, बीटेक, मेडिकल, बी ऐड, डीएलएड, आईटीआई, पॉलिटेक्निक जैसे सैकड़ों कोर्स उपलब्ध है। पर इन में से सही का चुनाव करना कठिन है। इसलिए काउंसलर की मदद ली जाती है।

गला काट कंपटीशन का आसानी से सामना करना

यह बात तो आप भी जानते होंगे कि आज देश में नौकरियां कम निकलती हैं परंतु आवेदन करने वाले लाखों-करोड़ों की संख्या में होते हैं। आजकल देश में गला काट कंपटीशन हो गया है। ऐसे में सरकारी नौकरी पाना आसान नहीं होता। किसी भी छोटी नौकरी के लिए स्नातक से लेकर बी टेक जैसे उच्च शिक्षाधारी अभ्यर्थी भी आवेदन करते हैं। ऐसे में कंपटीशन बहुत बढ़ जाता है। यदि आपका बच्चा सही स्ट्रीम कोर्स का चुनाव करता है तो वह कंपटीशन आसानी से निकाल लेगा। पर यह तभी संभव है जब उसे उसकी रुचि के अनुसार पढ़ने का मौका मिले।

मार्केट ट्रेंड की जानकारी

काउंसलिंग का बड़ा फायदा यह भी है कि इससे मार्केट ट्रेंड की जानकारी मिलती है। कई स्टूडेंट ऐसे कोर्स कर लेते हैं जिसे करने के बाद भी कोई नौकरी नहीं मिलती। स्टूडेंट इधर उधर भटकते रहते हैं। अपने पैसे भी वो खर्च कर देते हैं। उसके बावजूद भी कोई फायदा नहीं होता। काउंसलर आपके बच्चे को ऐसा कोर्स करने की सलाह देते हैं जिसे करने पर फायदा हो। वे उस कोर्स को करने से मना करते हैं जिसे करने से कोई लाभ नहीं है।

मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान

करियर काउंसलिंग का एक बड़ा फायदा यह है कि बच्चों और छात्रों की मनोवैज्ञानिक संबंधी समस्याओं का समाधान होता है। पढ़ाई करते वक्त बच्चे कई बार मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं। आईआईटी जैसे बड़े संस्थानों में बच्चे तनाव, अवसाद और डिप्रेशन में आकर आत्महत्या कर लेते हैं। काउंसलिंग के दौरान बच्चों को इस तरह की समस्याओं का सामना करने की विधि बताई जाती है। उन्हें सही तरह से गाइडेंस दिया जाता है।

स्टूडेंट्स की सभी समस्याओं का समाधान

बहुत से बच्चे पढ़ाई करते हुए शराब, नशीले पदार्थों का सेवन, प्यार, यौन शोषण जैसी समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं। करियर काउंसलिंग के दौरान काउंसलर बच्चों से हर तरह की समस्याओं पर खुल के बात करते हैं और समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

बच्चों की छिपी प्रतिभा को निखारने में मदद मिलती है

हर बच्चे के अंदर कुछ योग्यताएं होती हैं। पर कई बार वे छिपी हुई होती हैं। करियर काउंसलिंग के द्वारा बच्चे के अंदर छिपी हुई योग्यताओं को निखारने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए बहुत से बच्चे बड़े होकर प्रशासनिक अधिकारी (सिविल सर्विसेज) बनना चाहते हैं, पर शुरू में उन्हें स्पष्ट रूप से कुछ समझ नहीं आता है। काउंसलिंग के द्वारा उनकी छिपी योग्यताओं का पता चलता है।

इति श्री।

प्रस्तुति- नगेन्द्र सिंह झाला

रिक्तियाँ

वैज्ञानिक-बी

पद- सहा. भौतिकीविद व अन्य
रिक्त पद- 53
शैक्ष.यो-एमबीबीएस,डिग्री,पीजी
अंतिम तिथि- 27/02/20
आयु - 18-45 वर्ष

डीआरडीओ

पद- ट्रेड अप्रेंटशिप
रिक्त पद- 41
शैक्ष यो- आई.टी.आई
अंतिमतिथि- 06/03/20
आयु- 18 वर्ष से

आरआरकेट

पद- ट्रेड अप्रेंटशिप
रिक्त पद- 70
शैक्ष.यो- आई.टी.आई
अं. तिथि- 28/02/20
आयु- 20-24 वर्ष

बीएसएफ भर्ती

पद- एसआई, मैकेनिक व अन्य
रिक्त पद- 317
शैक्ष.यो- डिप्लोमा, डिग्री,
अं.तिथि- 15/03/20
आयु- 20-28 वर्ष

यूपीएससी भर्ती

पद- भारतीय वन सेवा
रिक्त पद - 90
शैक्ष.यो- कोई भी डिग्री
अंतिम तिथि-03/03/20
आयु- 21-32 वर्ष

यूपीएससी भर्ती

पद- सिविल सेवा
रिक्त पद - 796
शैक्ष.यो.- कोई भी डिग्री
अंतिम तिथि- 03/03/20
आयु- 21-32 वर्ष

आरआरसी पूर्वी रेलवे

पद- अप्रेंटशिप
रिक्त पद- 2792
शैक्ष.यो- 10 वीं, आईटीआई
तिथि- 13/03/20
आयु- 15-24 वर्ष

पश्चिम मध्य रेलवे

पद- प्रशिक्षु
रिक्त पद- 570
शैक्ष.यो.- 10 वीं, आईटीआई
अं.तिथि- 15/03/20
आयु- 15-24 वर्ष

आई.ओ.सी.एल भर्ती

पद-तक. एवं ट्रेड अप्रेंटशिप
रिक्त पद- 500
शैक्ष.यो- डिप्लोमा, डिग्री
अंतिम तिथि- 20/03/20
आयु- 18-24 वर्ष

Facebook! बिना यूज करें भी रखता है आप पर नजर

सोशल मीडिया वेबसाइट फेसबुक आपके ऊपर कितने तरह से नजर रखती है शायद आपको इस बात का अंदाजा भी न हो। आपके फोन में फेसबुक बंद है, आप कोई दूसरा ऐप यूज कर रहे हैं। किसी ऐप के जरिए शॉपिंग कर रहे हैं, या फिर कॉफी ऑर्डर कर रहे हैं, फेसबुक की नजर आपकी इस ऐक्टिविटी पर भी है। आम तौर पर ऐसा होता है जब आप किसी वेबसाइट से कुछ शॉपिंग करते हैं या फिर कोई खास प्रोडक्ट के बारे में सर्च करते हैं तो कुछ ही देर में वही प्रोडक्ट आपके फेसबुक में दिखने लगता है। ये दरअसल टार्गेटेड विज्ञापन है जिसे फेसबुक यूज करता है। अब फेसबुक दूसरी वेबसाइट्स से आपका डेटा कैसा हासिल करता है इसके बारे में जानते हैं।

Off Facebook Activity इसी बारे में है...

फेसबुक यूज न करें तो भी आपका ऑफलाइन डेटा फेसबुक के पास पहुंच जाता है। Facebook के पास एक Off Facebook Activity नाम का ऑप्शन है। हाल ही में फेसबुक ने हिस्ट्री डिलीट करने का बटन दिया है।

कैसे काम करता है Off Facebook Activity

Off Facebook Activity के तहत दूसरी कंपनियां फेसबुक के साथ आपका डेटा शेयर करती हैं। इस डेटा में ये आपके द्वारा उन कंपनियों के साथ किया गया इंटरऐक्शन शामिल होता है। उदाहरण के तौर पर आप किसी वेबसाइट से शॉपिंग करते हैं या फिर किसी वेबसाइट को फेसबुक लॉग इन के जरिए ऐक्सेस करते हैं।

आप शॉपिंग के लिए किसी ई-कॉमर्स वेबसाइट पर जाते हैं। यहां से कुछ खरीदते हैं या किसी प्रोडक्ट में दिलचस्पी दिखाते हैं। ये जानकारियां फेसबुक को भी मिलती हैं। फेसबुक का कहना है कि इससे पहले उन ऑर्गनाइजेशन को कहा जाता है कि वो यूजर्स को इसकी जानकारी दें।

Facebook के साथ दूसरी कंपनियां ऐसे शेयर करती हैं जानकारियां

आप किसी ऑनलाइन स्टोर से कपड़े खरीदते हैं। ये शॉप आपकी ऐक्टिविटी को फेसबुक के बिजनेस टूल की मदद से फेसबुक के साथ शेयर करेगा। अब जैसे ही फेसबुक के पास आपकी जानकारी दूसरे शॉप से मिलेगी वो इसे आपके अकाउंट में सेव कर देगा।

Facebook के मुताबिक ये जानकारी इस तरह से सेव की जाती हैं - यूजर ने ई-कॉमर्स वेबसाइट विजिट किया और यहां से क्या खरीदा।

दूसरी कंपनियां आपसे जुड़ा ये डेटा Facebook के साथ शेयर करती हैं-

आपने कौन सा ऐप ओनप किया है। आप क्या कॉन्टेंट देख रहे हैं। क्या आइटम सर्च कर रहे हैं। शॉपिंग कार्ट में क्या ऐड कर रहे हैं। क्या खरीद रहे हैं। डोनेशन की जानकारी। किसी ऐप को फेसबुक के जरिए लॉग इन करते हैं।

ये तमाम जानकारियां फेसबुक को दी जाती हैं। फेसबुक कहता है कि इस डेटा का इस्तेमाल टार्गेटेड ऐड के लिए किया जाता है। लेकिन क्या आप फेसबुक के इस दावे पर भरोसा करते हैं?

इस उदाहरण के जरिए समझें-

Facebook के मुताबिक ऐसा टार्गेटेड विज्ञापन के लिए किया जाता है। डीटेल्स मिल जाने के बाद कंपनी जब ई-कॉमर्स वेबसाइट पर कपड़ों की सेल लगेगी या कोई ऑफर आएगा आपको खुद ब खुद फेसबुक का विज्ञापन दिखने लगेगा।

हिस्ट्री डिलीट कर सकते हैं, लेकिन टार्गेटेड विज्ञापन आने बंद नहीं होंगे

फेसबुक ने दो साल पहले कहा था कि हिस्ट्री क्लियर करने का बटन आ रहा है। आखिरकार अब ये फीचर दिया गया है। इसे यूज करके आप यहां से हिस्ट्री तो डिलीट कर सकते हैं, लेकिन टार्गेटेड विज्ञापन मिलते रहेंगे।

इति श्री।

पुरुषों को नहीं खाना चाहिए ज्यादा अचार

अचार का चटपटापन खाने का जायका बढ़ा देता हैं, लेकिन इसे ज्यादा खाने से इसका नुकसान स्वास्थय पर भी पड़ता है। वैसे ज्यादा अचार खाने का नुकसान हर कसी के स्वास्थय पर पड़ता है लेकनि ज्यादा सेवन पुरुषों के लिए हानिकारक हो सकता है। आम के अचार का स्वाद खट्टा तो होता ही है। ऐसा माना जाता है कि आम के अचार में एक खास तत्व भी पाया जाता है। यह पुरुषों से उनकी सेक्सुअल हेल्थ पर भी असर डालता है। आइए जानते हैं कि आम के अचार का अधिक सेवन पुरुषों के लिए क्यों हानिकारक होता है?

इसलिए नजरअंदाज करना चाहिए

आम का अचार खाना पुरुषों को अक्सर आम के अचार का अधिक सेवन करने से मनाही की जाती है। हालांकि कुछ लोग इसे महज मिथक मानकर टाल देते हैं। एक अध्ययन के अनुसार पुरुषों को लगातार खट्टे का सेवन करने से बचना चाहिए। अगर वो ऐसा नहीं करते हैं तो हो सकता है कि वो उनमें नपुंसकता के लक्षण उभरने लगेंगे।

अचार में होता है असटामिप्रिड

हालांकि आम के अचार पर किए गए एक अध्ययन में यह बताया गया कि पुरुषों को आम के अचार का अधिक सेवन क्यों नहीं करना चाहिए। दरअसल आम के अचार में असटामिप्रिड की मात्रा होने पर ही यह आपके लिए हानिकारक हो सकता है। असटामिप्रिड एक कार्बनिक यौगिक है। यह दवा के रूप में आम को विभिन्न रोगों से बचाए रखने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसके सेवन से धीरे-धीरे यह आपकी सेक्सुअल डिजायर को खत्म कर सकता है। इसके अलावा आपके स्पर्म काउंट में कमी आने लगती है और साथ ही नाईटफाल भी बढ़ जाता है।

ज्यादा खाने से बचें- आम के अचार का सेवन ज्यादा करने से बचना चाहिए क्योंकि आज के वातावरण में यह मुमकिन ही नहीं है कि बिना किसी केमिकल के किसी भी फल को तैयार कर लिया जाए। इसलिए आम के अचार के अधिक सेवन से बचें। आप चाहें तो इसकी जगह पर खाने में चटनी, सलाद या सॉस आदि को शामिल करें। सेहतमंद बने रहने के लिए अपने खान-पान में अच्छे आहार शामिल करें।

इति श्री।

प्रतियोगी परीक्षा हेतु- सामान्य ज्ञान

सामान्य ज्ञान

वायुमंडल की संरचना

»»किस वायुमंडलीय परत को 'मौसमी परिवर्तन की छत' कहा जाता है–

क्षोभमंडल को

»»पृथ्वी की सतह से सबसे दूर वायुमंडलीय परत को क्या कहते हैं–

बहिर्मंडल

»»समुद्रतल पर औसत वायुदाब कितना होता है–

1013.25 मिलीबार

»»वायुदाब में अचानक कमी आना किसका सूचक है–

तूफानी मौसम

»»ग्लोब पर दाब कटिबंधों की संख्या कितनी होती है–

7

»»शांत पेटी किस रेखा के दोनों ओर पायी जाती है–

भूमध्य रेखा

»»विश्व के सभी उष्ण मरुस्थल किस पेटी में स्थित है–

उपोष्ण कटिबंधीय उच्च दाब पेटी

»»सामान्य वायुदाब कहाँ पाया जाता है–

सागर तल पर

»»पृथ्वी के वायुमंडल का कितने प्रतिशत भाग 29 किमी. की ऊँचाई तक पाया जाता है–

97 प्रतिशत

»»मेघ गर्जन वायुमंडल की किस परत में होता है–

क्षोभमंडल में

»»किस मंडल में तापमान का अधिक चढ़ाव उतार नहीं होता है–

समताप मंडल में

»»किस ऋतु में क्षोभमंडल की ऊँचाई में वृद्धि होती–

ग्रीष्म ऋतु में

»»ओजोन परत के अवक्षय के कारण एक छिद्र बन गया है, वह छिद्र कहाँ स्थित है–

अंटार्कटिका के ऊपर

»»क्षोभमंडल की ऊपरी सीमा पर स्थित परत क्या कहलाती है–

समताप सीमा

मेघ एवं वर्षण

»»ओक्टॉस मापन का प्रयोग किसके लिए किया जाता है–

मेघाच्छादन की मात्रा

»»कौन-सा मेघ अत्यधिक वर्षा के लिए प्रसिद्ध है–

वर्षा स्तरी

»»किस मेघ को 'मोती की माता' कहा जाता है–

पक्षाभ मेघ

»»नेफोमीटर द्वारा किसे मापा जाता है–

बादलों की दिशा व गति

»»कौन-सा मेघ वायुमंडल में सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित होता है–

पक्षाभ मेघ

»»किस मेघ का शीर्ष 'गोभी के फूल' की तरह दिखाई देता है–

कपासी मेघ

»»रेगिस्तानों में बादल क्यों नहीं बरसते हैं–

कम आर्द्रता के कारण

»»भूमध्य प्रदेश में किस प्रकार की वर्षा होती है–

संवहनीय वर्षा

»»कौन-सी वर्षा बिजली की चमक और बादलों की गरज के साथ होती है–

संवहनीय वर्षा

»»कृत्रिम वर्षा करने के लिए किसका प्रयोग किया जाता है–

सिल्वर आयोडाइड

»»रेशेदार दिखाई देने वाले मेघ को क्या कहते हैं–

पक्षाभ

»»कपासी मेघ कहाँ पाए जाते हैं–

विषुवतीय प्रदेशों में

»»कौन-सा मेघ सूर्य एवं चंद्रमा में चारों ओर प्रभामंडल का निर्माण करते हैं–

पक्षाभ स्तरी मेघ

»»विश्व में अधिकांश वर्षा किस प्रकार की वर्षा होती है–

पर्वतीय वर्षा

»»किस क्षेत्र में जाड़े की ऋतु में वर्षा होती है–

भूमध्य सागरीय क्षेत्र में

»»विश्व में वर्षा का औसत कितना है–

100 सेमी.

»»विश्व का सबसे शुष्क स्थल कौन-सा है–

अटाकामा

विश्व के चक्रवात

»»हरिकेन क्या है–

एक चक्रवात

»»चक्रवात की उत्पत्ति कैसे होती है–

दो भिन्न तापमान वाली राशियों से

»»चक्रवात की दिशा क्या होती है–

उत्तरी गोलार्द्ध में घड़ी की सुई के विपरीत और दक्षिणी गोलार्द्ध में घड़ी की सुई के अनुकूल

»»चक्रवात की आकृति कैसी होती है–

अंडाकार

क्रमशः

प्रस्तुति-
जयदीप सिंह कुम्पावत

movie review!

'शुभ मंगल ज्यादा सावधान'

रोज हमें लड़ाई लड़नी पड़ती है जिंदगी में, पर जो लड़ाई परिवार के साथ होती है, वो सारी लड़ाई सबसे बड़ी और खतरनाक होती है। आनंद एल राय निर्मित और हितेश केवल्या निर्देशित 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' का यह डायलॉग समलैंगिक कम्युनिटी की बेबसी और संघर्ष को बयां करता है। वाकई आज भले कानून ने समलैंगिता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया हो, मगर समलैंगिक समुदाय को होमोफोबिया के रूप में अपने ही परिवारों से घृणा, तिरस्कार और रिजेक्शन सहना पड़ता है। फिल्म इस पॉइंट को साबित करने में सफल साबित होती है कि सिर्फ कानून बनाने से बात नहीं बनेगी, सामजिक तौर पर यह काउंसिलिंग होनी भी जरूरी है कि होमोसेक्शुऐलिटी कोई बीमारी नहीं बल्कि कुदरत है, प्रकृति है और उससे आप नफरत नहीं कर सक सकते।

कहानी के शुरुआती दौर में ही यह साफ हो जाता है कि कार्तिक (आयुष्मान खुराना) गे है और वह अमन त्रिपाठी (जितेंद्र कुमार) से प्यार करता है। उनका असली संघर्ष तब शुरू होता है, जब अमन की कजिन की शादी के दौरान अमन के पिता शंकर त्रिपाठी (गजराज राव) उन दोनों को ट्रेन में चुम्बन करते हुए देख लेते हैं। अमन के पिता अपने बेटे की होमोसेक्शुऐलिटी को समझ भी नहीं पाए थे कि शादी के दौरान दोनों के रिश्ते का सच सबके सामने आ जाता है। उसके बाद तो दोनों के प्यार में कई दीवारें खड़ी करने की कोशिश की जाती हैं।

कार्तिक को मारा-पीटा जाता है। संयुक्त परिवार में भाई, बहन चाचा-चाची के बीच मां (नीना गुप्ता) अमन को समझाने की कोशिश करती है कि इस 'बीमारी' का इलाज संभव है। मां पंडित जी से कर्म-कांड करवा कर अमन का अंतिम संस्कार कर उसे नया जन्म देने की विधि भी करवाती है। और तो और पिता आत्महत्या की कोशिश और धमकी देकर अमन को शादी करने पर मजबूर भी कर देते हैं। पिता और परिवार के लिए अमन शादी करने को राजी हो जाता है। मगर कार्तिक लगातार अमन को समझाता रहता है कि उसे अपने प्यार के लिए आगे आना होगा? क्या कार्तिक और अमन अपनी सेक्शुऐलिटी के साथ परिवार की ऐक्सेप्टेंस हासिल कर पाते हैं? इसे जानने के लिए आपको फिल्म देखनी पड़ेगी।

समीक्षा बैठक! माइक्रोफाइनेंस कंपनियों की कोई भी शिकायत एडीएम अथवा एसडीएम को करे- कलेक्टर

जनवकालत

रतलाम। जिले में माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के संबंध में कोई भी पीड़ित व्यक्ति अपनी शिकायत प्रशासन को दर्ज करा सकता है। समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने निर्देश दिए कि कंपनियों के कर्ज जाल में फंसा कोई भी व्यक्ति अपर कलेक्टर श्रीमती जमुना भिड़े अथवा अपने क्षेत्र के एसडीएम को शिकायत दर्ज करा सकता है। अपर कलेक्टर को इस संबंध में नोडल अधिकारी बनाया गया है कलेक्टर ने बैठक में अन्य विभागों की योजनाओं कार्यक्रमों की भी समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश अधिकारियों को दिए। बैठक में सीईओ जिला पंचायत श्री संदीप केरकेट्टा तथा जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के संबंध में जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक श्री राकेश गर्ग को भी आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। कलेक्टर ने सभी एसडीएम को निर्देश दिए कि कंपनियों से पीड़ित कोई भी व्यक्ति आपके पास आता है तो उसकी शिकायत बकायदा रजिस्टर की जाए। शिकायत पर तत्काल एक्शन ली जाए।

कलेक्टर ने जय किसान फसल ऋण माफी योजना की समीक्षा करते हुए उप संचालक कृषि श्री जी.एस. मोहनिया को जिले की शेष बची तहसीलों में भी ऋण माफी कार्यक्रम आयोजन की तैयारियों के निर्देश दिए। कलेक्टर ने उपायुक्त सहकारिता को यहां सुनिश्चित करने को कहा कि दूसरे चरण में सैलाना, बाजना रावटी तथा ताल के लाभान्वित किए गए कर्ज माफ हुए वाले पात्र शत-प्रतिशत किसानों को ऋण मुक्ति प्रमाण पत्र मिल जाए। इस आशय का प्रमाण पत्र भी उपायुक्त सहकारिता प्रस्तुत करें।

राज्य शासन द्वारा लागू की गई मुख्यमंत्री मदद योजना के तहत पात्र आदिवासी परिवारों को लाभान्वित किए जाने हेतु कलेक्टर ने निर्देश दिए कि संबंधित ग्राम पंचायतों के सचिव द्वारा समय सीमा में आदिवासी परिवारों में जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र जारी कर दिए जाएं ताकि संबंधित परिवार को शासन द्वारा निशुल्क प्रदाय किए जाने वाले खाद्यान्न की पूर्ति की जा सके। योजना में आदिवासी परिवार में जन्म के अवसर पर 50 किलोग्राम तथा मृत्यु के अवसर पर 100 किलोग्राम खाद्यान्न निशुल्क प्रदान किया जाता है। मदद योजना में आदिवासी पंचायतों में दिए जाने वाले बर्तनों की टेंडर कार्रवाई जारी है। जिले में बीपीएल परिवारों के सत्यापन के लिए जारी अभियान के तहत सैलाना तथा बाजना विकास खंडों में बचे हुए कार्य को शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश कलेक्टर ने दिए। इस संबंध में कलेक्टर ने बाजना तथा सैलाना के जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों से कहा कि यदि समय सीमा में कार्य नहीं हुआ तो उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी यह उनको अंतिम चेतावनी है।

राज्य शासन की स्व रोजगार मूलक मुख्यमंत्री योजनाओं की समीक्षा में कलेक्टर ने निर्देश दिए कि बैंक शाखाओं के प्रबंधकों द्वारा प्रकरणों में स्वीकृति के साथ ही वितरण की कार्रवाई भी समय सीमा में की जाना चाहिए यदि किसी बैंक शाखा प्रबंधक द्वारा हितग्राही के साथ दुर्व्यवहार का प्रकरण सामने आता है तो उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई सुनिश्चित रूप से की जाएगी।

खुशियों की दास्तां

ऋण माफी योजना में 1 लाख 93 हजार की कर्ज माफी से खुश है किसान कनीराम

जनवकालत/रतलाम। सैलाना विकासखंड के ग्राम सांसर में खेती करने वाले आदिवासी किसान कनीराम पिता कोदर मुख्यमंत्री जय किसान फसल ऋण माफी योजना में मिले 1 लाख 93 हजार 958 रूपये की कर्ज माफी से उत्साहित होकर कहते है कि मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ ने किसानो से किया अपना वादा पूर्ण कर दिखा दिया है कि वे किसानों की समस्याओं के निवारण के लिये अत्यंत सजग है। श्री कनीराम कहते है कि शासन की ऋण माफी योजना उन जैसे छोटे किसानो के लिए कितनी कारगार है यह कोई पूछे, उन जैसे छोटे किसानों से जिन्होने इन ऋण माफी योजना की राशि के सहारे ही अपने खेतों में इस बार की फसल लगा रखी है अन्यथा ऋण चुकाना तो दूर की बात थी, खेतो में फसल लगाना ही मुश्किल था।

सैलाना में आयोजित जय किसान फसल ऋण माफी योजना कार्यक्रम में श्री कनीराम को जैसे ही जिले के प्रभारी मंत्री श्री सचिन यादव तथा विधायक श्री हर्षविजय गेहलोत के हाथो जैसे ही ऋण माफी योजना का प्रमाण पत्र मिला उनकी आंखे खुशी से छलछला आई। उन्होने खुशी-खुशी बताया कि जय किसान फसल ऋण माफी योजना के सहारे ही वे अपने खेत में विभिन्न फसले लगा पाए है अन्यथा समिति से लिए गये ऋण के कारण वे डिफाल्टर की श्रेणी में आ जाते और उन्हें पुनः कही से ऋण नही मिलता, तो उनका क्या होता, यह वे कहकर नही बता सकते।

नई सुविधा! मार्कशीट में सुधार के लिए ऑनलाइन आवेदन होंगे मंजूर

रतलाम। माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल की बोर्ड परीक्षा की मार्कशीट में संशोधन या सुधार कराने के लिए विद्यार्थियों या उनके अभिभावकों को अब राजधानी भोपाल के चक्कर नहीं लगाना होंगे। बोर्ड परीक्षा की मार्कशीट में नाम, जन्म तारीख, मीडियम या अन्य कोई सुधार के लिए छात्र-छात्राएं ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। यहां ही समन्वय संस्था में दस्तावेज जमा करना होंगे। दरअसल, अभी तक सबसे ज्यादा परेशानी यह थी कि छात्र-छात्राएं आवेदन तो ऑनलाइन तो ऑनलाइन कर देते थे, लेकिन उन्हें दस्तावेज लेकर भोपाल बोर्ड ऑफिस जाना पड़ता था।

नया आदेश

इन सभी परेशानियों से विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को बचाने के लिए बोर्ड ने नया आदेश जारी किया है। इसमें कहा गया है कि जिले की समन्वय संस्था द्वारा परीक्षा के दौरान ऑनलाइन आवेदन की हार्डकॉपी जमा करवाने से लेकर रोल नंबर, परीक्षा के पेपर, कॉपियों का वितरण किया जाता है। इसके साथ ही अब मार्कशीट संबंधी कार्य भी करेंगे। अब मार्कशीट में संशोधन का कार्य भी जिले की समन्वय संस्था के प्राचार्य देखेंगे। इसके लिए छात्र को ऑनलाइन आवेदन कर दस्तावेज जमा कराना होंगे। यहां से प्राचार्य दस्वावेज देख स्वीकृति देंगे। इससे मार्कशीट में सुधार हो जाएगा।

निरीक्षण! ईटों की क्वालिटी पर आयुक्त ने जाहिर की नाराजगी

जनवकालत/रतलाम। भोपाल से आए मध्य प्रदेश शासन के निशक्तजन कल्याण विभाग आयुक्त श्री संदीप रजक ने सोमवार को रतलाम में विभिन्न संस्थानों का निरीक्षण किया। इस दौरान बिरियाखेड़ी क्षेत्र में निर्माणाधीन जिला विकलांग पुनर्वास केंद्र का निरीक्षण करते हुए उपयोग में ली जा रही ईटों की गुणवत्ता पर अप्रसन्नता व्यक्त की। संबंधित इंजीनियर को तत्काल ईटों को बदलने के निर्देश दिए। आयुक्त ने डे-केयर सेंटर तथा वृद्ध आश्रम भी देखा। निवासरत बुजुर्गों से मुलाकात की, चर्चा करते हुए खुश रहने के लिए बुजुर्गों को टिप्स भी दिए।

आयुक्त श्री रजक ने सीडब्ल्यूएसएन छात्रावास का भी निरीक्षण किया। छात्रावास के किचन कक्ष तथा अन्य व्यवस्थाओं पर संतुष्टि व्यक्त की। दिव्यांग विद्यार्थियों की परीक्षाओं की तैयारियों को देखते हुए निर्देश दिए कि विशेष शिक्षकों द्वारा अतिरिक्त समय दिया जा कर बच्चों की पढ़ाई करवाई जाए। छात्रावास के पास निर्माणाधीन उद्यान का एक गेट छात्रावास की ओर किए जाने के निर्देश भी दिए ताकि दिव्यांग बच्चे उद्यान का लाभ ले सकें उन्होंने कहा कि उद्यान को दिव्यांग अनुभूति पार्क के रूप में विकसित किया जाएगा।

आयुक्त ने निर्माणाधीन जिला विकलांग पुनर्वास केंद्र में बनाई जा रही रैंप तथा रेलिंग पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए ताकि दिव्यांगजन की ट्राईसाईकिल या व्हील चेयर सरलता पूर्वक आ जा सके संपूर्ण प्रांगण को बाधा रहित बनाने हेतु भी निर्देशित किया। वृद्धाआश्रम के निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने वृद्धाआश्रम के सब कमरों में वेंटिलेशन नहीं होने पर खिड़कियां खोल कर रखने और कक्षों की प्रतिदिन सफाई हेतु निर्देशित किया। डे-केयर सेंटर निरीक्षण के दौरान गतिविधियों की प्रशंसा की सेंटर का ज्यादा से ज्यादा प्रचार करने पर जोर दिया इसके अलावा वृद्धाआश्रम में बनाए गए रैंप की लंबाई बढ़ाने तथा उसे बाधा रहित बनाने के लिए निर्देश दिए।

* स्मृति प्रसंग *

किसान पुत्र राजनेता, मंत्री स्वर्गीय घनश्याम पाटीदार

ललित भाटी इंदौर
जनवकालत/रतलाम

कैसे, कोई एक अति सामान्य परिवार का व्यक्ति, जनसेवा की भावना के साथ राजनीति की डगर पर, अपने अडिग सिद्धान्तों के साथ चलते हुए, एक प्रदेश की सरकार में केबिनेट मंत्री के पद तक पहुंच सकता है, इस बात का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थे, तत्कालीन कांग्रेसी राजनेता घनश्याम पाटीदार।

21 सितम्बर, 1939 को मन्दसौर जिले के जनकपुर ग्राम में ,एक किसान परिवार में उनका जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव में तथा पश्चात की जावद और मन्दसौर में ग्रहण की। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत सामान्य थी, अतः मलेरिया विभाग में दैनिक मजदूरी पर काम करना जरूरी हो गया था, किया। योग्यता का साथ था, इसलिए एस पी कार्यालय मंदसौर में क्लर्क के पद पर नियुक्ति मिल गई। नोकरी के साथ साथ 1965 में अपनी स्नातक शिक्षा पूरी करते हुए, 1968 में विधि स्नातक हो गए। जीवन लक्ष्य समाजसेवा था, अतः 1970 में शासकीय सेवा से मुक्त होकर, नीमच से वकालत शुरू कर दी।

1972 में कांग्रेस की सदस्यता प्राप्त कर, अपना कर्म क्षेत्र नीमच के साथ जावद को भी बना लिया। उन्होंने जावद के ही सहकारी श्रेत्र के सक्रिय राजनेता ,कन्हैयालाल नागोरी के साथ जुड़कर राजनीति में अपनी भूमिका का निर्वहन प्रारंभ कर दिया। जावद से जब नागोरी जी विधायक बने, तब पाटीदार जी, मंदसौर भूमि विकास बैंक के 10 वर्षों तक लगातार उपाध्यक्ष रहे। इसके पश्चात तत्कालीन रतलाम, मंदसौर श्रेत्रीय ग्रामीण बैंक के डायरेक्टर भी रहे। गहरी जनप्रियता के चलते, 1993 में जावद विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक बने।

मितव्ययी तो वे थे ही, शासकीय बजट को भी किफायत से खर्च करने वाले राजनेता थे। यही कारण रहा कि, उन्होंने अपने श्रेत्र में अधिकांश बड़े कार्य, सीमित बजट होने के कारण, अपने श्रेत्र के अनेक समाजसेवियों तथा व्यावसायियों के आर्थिक सहयोग से भी सम्पन्न कराए। उनके छोटे भाई बृज नेहरू पाटीदार, जो कि कृषि विभाग से एक अधिकारी के नाते सेवामुक्त हुए हैं तथा वर्तमान में समाजसेवा के साथ स्वतंत्र लेखन से भी जुड़े हैं, ने बताया कि, मंत्री बनने के बाद भी पाटीदार ,अपने कार्यालय को प्राप्त होने वाली डाक के खाली लिफाफे फेंकते नहीं थे, बल्कि उन्हें सलीके से काटकर पुनः लिखने योग्य बना लिया करते थे। उनकी कार्यशैली का भी प्रशासनिक क्षेत्रों में सम्मान रहा। अपने विधानसभा क्षेत्र में ,अपने ही दुपहिया वाहन से भ्रमण कर, लोगों से मिलना भी उनका स्वभाव रहा। व्यक्ति चाहे ,परिचित हो या अपरिचित ,बीमार एवं जरूरतमंद की सहायता में आगे रहकर सहयोगी रहते थे।

सादा जीवन, ऊंचे विचार और मूल्य आधारित राजनीति करने के कारण, वे अपने श्रेत्र में निरंतर लोकप्रिय होते चले गए। कांग्रेस की राजनीति में उनको यह प्रतिष्ठा प्राप्त रही, कि वे तत्कालीन मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के सयुंक्त सचिव, विधायक दल की कार्यकारिणी के संयोजक, जेल सुधार समिति के सभापति, मध्यप्रदेश विधानसभा विशेषाधिकार समिति के अध्यक्ष, सार्वजनिक उपक्रम समिति और लोकलेखा समिति के सदस्य रहने के साथ ही,चिकित्सा विभाग की परामर्शदात्री समिति एवं कर्मचारी आवास आबंटन समिति के अध्यक्ष भी रहे।

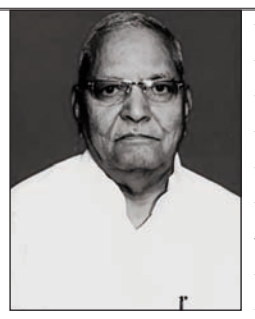

एक जिम्मेदार विधायक के नाते, अपने बेहतर कर्त्व्य निर्वहन हेतु उन्हें 1998 में, उत्कृष्ट विधायक सम्मान से भी अलंकृत किया गया। चूंकि निजी जीवन में ईमानदारी व्याप्त थी, अतः अपने विधानसभा क्षेत्र में, अपने द्वारा कराए गए कार्यों का लेखा जोखा, पुस्तिका 'मैदानी सच्चाई' के माध्यम से लोगों के बीच रखा। यह नवीन प्रस्तुतिकरण अन्य विधायकों हेतु भी प्रेरणादायी बना।

1998 के चुनाव में वे पुनः विधायक बने।स्वच्छ राजनीतिक छवि एवं अनुभव के चलते, वे तत्कालीन प्रदेश सरकार में केबिनेट मंत्री मनोनीत किए गए। यहां भी वे पीछे नहीं रहे, उत्कृष्ट मंत्री होने का यश भी उनके सम्मान खाते में जमा हुआ। जब वे मंत्री हुआ करते थे, तब भी कोई भी, कहीं भी, कभी भी उनसे मिल सकता था। 24 घंटों में से ,समय का एक बड़ा हिस्सा, उनके अनथक काम करने का हुआ करता था। अपने कार्य को इतनी प्राथमिकता देते थे, कि कभी कभी नींद लेने का काम सफर के दौरान ही कर लिया करते थे। उनकी राजनीति, दलगत राजनीति से कोसों दूर थी, इसलिए सभी के प्रिय पात्र बने रहे। 2 फरवरी, 2019 को उनका प्रभुमिलन हो गया। मरणोपरांत भी नेत्रदान होने से, अतिरिक्त जन सम्मान के सुपात्र घोषित हो गए। मध्यप्रदेश की कांग्रेसी राजनीति में, जब भी आदर्श राजनेताओं की बात चलेगी, तब घनश्याम पाटीदार जैसे राजनेताओं को शीर्ष क्रम पर स्मृति में लाया जाएगा।

शिक्षा जगत की अजब कहानी

डॉ. आर.पी. चतुर्वेदी

गतांक से आगे....

परंतु अधिकांश स्कूल किराए के भवनों में और अपर्याप्त व्यवस्थाओं के बीच संचालित हो रहे हैं जिनका भौतिक सत्यापन इमानदारी से हो तो अनेक कमियां उजागर हो सकती है। अनेक निजी स्कूल छोटे-छोटे कमरों के किराए के भवनों में चल रहे हैं तथा धनी बस्तियों में नेशनल, इंटरनेशनल नाम के साथ लगाकर चलाए जा रहे हैं और कहीं-कहीं तो बहुमंजिला इमारतों में चलाए जा रहे हैं। प्रदेश की राजधानी भोपाल में ही जहां शिक्षा विभाग का मुख्यालय तथा सबसे बड़ा मंत्रालय है वहां भी अनेक प्राइवेट स्कूल सकरी गलियों में चलाए जा रहे हैं, जहां खेल के मैदान भी नहीं है तथा कई जगह शुद्ध पानी की भी पर्याप्त व्यवस्था या उपलब्धता नहीं है। बच्चे अपने घर से 2-3 लीटर की बोतल भी पानी की भारी भरकम बस्ते के साथ ढोकर ले जाते हैं। जब राजधानी में ही यह स्थिति है तो अन्य शहरों, कस्बों, ग्रामों की तो बात ही क्या है। पिछले कुछ वर्षों से तो शिक्षा का पूरी तरह से व्यवसायीकरण हो चुका है। नर्सरी से लगाकर प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, कॉलेज, प्रशिक्षण के बीटीआई, आईटीआई, बी.ए ड., एम.एड. आदि प्रशिक्षण के कॉलेज भी प्राइवेट रूप से संचालित हो रहे हैं। इनमें से कुछ तो नामी संस्थाएं अच्छे प्रबंधन वाले ठीक से संचालित हो रही है परंतु अधिकांश तो धन कमाने के उद्देश्य से खोली गई है। जहां छात्रों तथा पालको और पढ़ाने वाले अध्यापकों का जमकर शोषण हो रहा है। इन स्कूलों में सरकारी स्कूलों के नियम कायदों तथा व्यवस्थाओं के पालन का भी अभाव देखा जाता है। सरकारी संस्थाओं में सरकारी कार्यक्रम या राष्ट्रीय आयोजन तथा साहित्यिक गतिविधियों और संस्कारों की नैतिक शिक्षा की क्रीडा गतिविधियों आदि का जो आयोजन होता है उसका अधिकांश प्राइवेट स्कूलों में अभाव देखा जाता है। इन प्राइवेट स्कूलों में मनमाने तरीके से फीस हर साल बढ़ाई जाती है। डोनेशन या गतिविधि या अन्य मद के नाम पर भी मनमानी फीस वसूली जाती है। यहां तक कि कई स्कूलों के तो कक्षा 6 से लगाकर 10 के प्रवेश आवेदन भी 500 रूपए से अधिक कीमत में बेचे जाकर रुपए वसूल किए जाते हैं। अर्थात कदम-कदम पर मनमानी चलती है, जिस पर किसी का कोई नियंत्रण ही नहीं है।

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

क्रमशः

कथा-'पालना'

बृजनेहरू पाटीदार
जनवकालत

गतांक से आगे...

प्रसव होते ही शिशु की आवाज सुनकर चिड़ियायें चहकने लगी, आपस में मुंह से मुंह लगाकर बतियाने लगे। कुछ पक्षी पेड़ से नींचे उतर आये चीं-चीं, गटर गूं करने लगे उनकी आवाजों से लग रहा था जैसे सभी मंगल गीत गा रहे हों। नर्स मेडम ने जच्चा-बच्चा की देखभाल कर आवश्यक चिकित्सीय कार्य कर जरूरी सलाह, दवाई आदि देने का काम किया। ये फायदा होवे बाबूजी काम करते रहने का। काम करो तो दुःख में भी कायनात साथ देने लगे साहब। बूढ़ी चाची ने जाते हुए कहा।

विक्रम मुस्कारा दिया। थोडी ही देर में बडी पलटन भी जजकी का सभी सामान लेकर आ गई। हरिया का हालचाल पूंछकर फूफी को सभी सामान देते हुए बोली हरिया को कोई कमी नहीं होनी चाहियें। अभी इसको अजवाईन का पानी दो। फिर जो जो लगे दलिया, दुध, घी, काजू-बादाम, कीशमीश, देशी दवाईयां सब है इसमें ओर जो भी लगे बताना। अरे वीरसिंग को बताया भी बच्चा हुआ या घर लक्ष्मी आई है। लल्लन भयो बडी मालकीन अंदर से फूफी ने तेज आवाज में जवाब दिया। अरे वाह ये तो हलधर है भाई इसका नाम बलराम रखना। सुनकर सभी ने ताली बजा दी। करतल ध्वनी सुनकर पेड़ो पर बैठे पक्षी भी चहकने लगे। अभी पांच सात दिन ही निकले होंगे कि हरिया ने बलराम की इमली की डाल पर डाल, कमर में पुरानी लुगडी (पुरानी चुनरी) का पट्टा बांधकर खेत में अपने पति के पास काम करने पहुंच गई। खेत में काम करने वाले चकित हो देखते रह गये। कोई ऊंगली दबाये, कोई गुस्से में, लगभग सभी के मुख से निकला क्यों रे पागल हो गई क्या तू। छोटे से बच्चे को छोडकर यहां आ गई। फिर अभी तो तेरी कमजोरी भी नहीं निकली। नहीं नहीं आप चिंता न करो मैं ठीक हुं। मेरे मरद को अकेले कितना काम करना पडेगा। वीरसिंग ने जवाब दिया नहीं नहीं मेरी चिंता काहे करती है मैं ठीक हूं। मुझे कोई परेशानी नही है। छोटे साहब ने भी कहा था तुम आराम करना किसी बात की चिंता नही करना। बच्चे की देखभाल भी तो करनी होगी। नहीं-नहीं मैं समय-समय पर जाकर दूध पीला दूंगी। देखो वहां पर शेरू (श्वान) और श्योरी ध्यान रखने के लिये है। जैसे ही बच्चा रोता है छोटी-बड़ी चिडियाएं, तोते, कबुतर आदि पक्षी कैसे मीठी-मीठी आवाजे कर उसे सहलाते है। वो देखो मोर ओर सारस का जोडा भी आ गया। खेत पर काम कर रहे सभी जन ये दृश्य देखकर विस्मीत हो, भाव विभोर हो गये। ये तो बांके बिहारी की ही लीला है। बूढ़ी चाची सही कहती है नन्हे बच्चों का तो कायनात भी साथ देने लगती है। इसी दौरान छोटे मालिक विक्रमसिंग ओर बडी पलटन की भी जीप आकर खडी हो गयी वो भी पलभर पालने के पास का दृश्य देखकर विस्मय के साथ आनन्दीत हो गये। बोली ये तो पालनहार का पालना है। अब इसकी चिंता तो उसके ही हाथ है। उधर हरिया को खेत में काम करते देख बोले ये नहीं मानेगी कोई समझाओ इसे। शिशु को माँ का कोमल स्पर्श भी तो चाहिये।

इति श्री।

Actual size Page 8 back page_master.qxd 2/26/2020 11:45 AM Page 1

देश में आदिवासी क्षेत्रों में पांचवी अनुसूची के अनुपालन हेतु राज्यपाल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस रायपुर में संपन्न

जनवकालत/ रायपुर

आदिवासियों के अधिकारों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने हेतु बनाई गई पांचवी अनुसूची के पालन एवं प्रतिवर्ष सौंपे जाने वाले प्रतिवेदन पर राष्ट्रीय स्तर की कॉन्फ्रेंस जिसमें अनुसूचित क्षेत्रों के प्रदेशों के राज्यपालों और आदिवासी जनप्रतिनिधियों, उद्योगपतियों और बुद्धिजीवी की उपस्थिति में राज्यपाल महामहिम छत्तीसगढ़ सुश्री अनुसुइया उइके की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस कार्यशाला का आयोजन झारखंड की ट्राईबल कोलफील्ड प्राइवेट कंपनी लिमिटेड द्वारा किया गया था, जिसमें झारखंड सहित छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कांफ्रेंस का उद्देश्य देश के आदिवासी क्षेत्रों से निकलने वाले खनिज भंडारों, वनोपज सहित अन्य संसाधनों, जल जंगल और जमीन को प्राकृतिक नुकसान पहुंचाए बिना कैसे सुरक्षित रखा जाए और उन पर स्थानीय लोगों का अधिकार कैसे सुरक्षित रहे, इस पर मंथन एवं समीक्षा कर राष्ट्रपति एवं केंद्र सरकार को रिपोर्ट बनाना था। संविधान में दिए गए अधिकारों के पालन हेतु (अनुच्छेद 355) आदिवासी कंपनियों का निर्माण कर अनुसूचित क्षेत्रों से निकलने वाले खनिजों पर हक अधिकार स्थानीय लोगों का हो, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके। अभी तक देश में अडानी, अंबानी, टाटा, जिंदल जैसे बड़े-बड़े कारपोरेट घरानों का ही कब्जा रहा है। आदिवासी हितों को संरक्षित करने वाली अभी तक कोई बड़ी कारपोरेट कंपनी नहीं होने के कारण सरकार द्वारा निकलने वाली निविदाओं में आदिवासी संस्थाएं शामिल नहीं हो पाती थी, इसलिए अब ट्राईबल कोलफील्ड प्राइवेट लिमिटेड एवं मर्मु पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड जैसी कंपनी बनाकर देश में औद्योगिक सहभागिता को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है, और कंपनी के शेयर बढ़ाकर अन्य क्षेत्रों में भी कंपनी का विस्तार करने पर विचार किया गया।

इस कॉन्फ्रेंस में विभिन्न प्रदेशों से आए जनप्रतिनिधियों, उद्योगपतियो, बुद्धिजीवियों को समिति बनाकर राष्ट्रपति सहित केंद्र एवं राज्य सरकारों को आदिवासी जन भागीदारी बढ़ाने हेतु प्रतिनिधि नियुक्त किए गए, जो समय-समय पर स्थानीय सरकारों से संवाद कायम कर सकेंगे। देश में पहली बार इस तरह कांफ्रेस आयोजित की गई जिसमें सिर्फ आदिवासी उद्योगपतियों को ही आमंत्रित किया गया, और राज्यपालों द्वारा प्रतिवर्ष पांचवी अनुसूची के पालन प्रतिवेदन पर समीक्षा की गई। इस कांफ्रेंस में मध्यप्रदेश से डॉ. अभय ओहरी, श्री रूपचंद रावत, राजस्थान से श्री भंवरलाल परमार और चौरासी के विधायक श्री राजकुमार रोत सहित गुजरात के श्री शान्तिकर वसावा ने प्रतिनिधित्व किया।

वार्षिक ध्वजारोहण कार्यक्रम संपन्न

जनवकालत/रतलाम

प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विध्यालय गीता पाठ शाला अल्कापुरी केंद्र द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम उत्सवी माहोल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि क्षेत्रीय पूर्व पार्षद श्रीमती वंदना अनिल पुरोहित एवं विशेष अतिथि पशिमी रेलवे महिला विंग कि अध्यक्षा श्रीमती सीमा कोशिक ने ध्वजा वंदन किया। सेवाकेंद्र डोंगरे नगर की संचालिका सविता दीदी, गायत्री दीदी, साक्षी दीदी ने अतिथियों का स्वागत कर कार्यक्रम की जानकारी दी। अतिथियों ने अपने उद्बोधन में परमपिता परमेश्वर को याद करते हुवे कहा कि हम सब को अपने जीवन में सत्य को जागृत करना होगा, तभी आत्मा से परमात्मा की मुलाकात संभव हो सकती है। शिव भगवन की कृपा पूरी सृष्टि पर है, और वही सब का पालन हार है। साथ ही सभी ने जीवन के उद्धार हेतु प्रतिदिन भगवान शिव का ध्यान कर अपनी आत्मा को स्व्च्छ रखने का आव्हान किया। धजारोहना के अवसर पर सभी उपस्थित जनो द्वारा अपनी एक बुराई को त्यागने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान केक काट कर महाशिवरात्रि पर्व का उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती यशोदा कोशिक, विनीता बहन, संगीता पुरोहित, योगेश्वरी वर्मा, मंजुला शर्मा, मंगला परमार, महेंद्र प्राकश कोशिक, अनिल पुरोहित, आशुतोष गोड, आशा पुरोहित, रोशनी दीदी, योगेश वर्मा, रानी चत्तर, प्रीति सेन, रूपेश पटेल, शकुंतला टेपन, चन्द्रिका बोहरा, संगीता गुप्ता आदि अनेको धर्मालुजन उपस्थित थे। संचालन श्रीमती मजुला शर्मा व आभार विनीत कोशिक द्वारा व्यक्त किया गया।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, संम्पादक- 'राजेश झाला ए. रज़ाक' द्वारा एम.बी. ऑफसेट प्रिन्टर्स, 285, एम.जी. रोड़, इन्दौर से मुद्रित, 21, ए. जवाहर नगर , मेन रोड़, श्री सॉवलिया फ्लोअर मिल के पास, रतलाम (म.प्र.) से प्रकाशित। RNI NO.- MPHIN/2012/49631 फोन न.- 09907008480, 07828794341, 07412-407442 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। किसी भी प्रकार के विवादो का न्यायकार्य क्षेत्र रतलाम रहेगा। RTM/DN/MP/200/19-21